

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

मोहं जंति णरा
असंवुडा

जो असंवृत होते हैं,
वे मोह को
प्राप्त होते हैं।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 4 • 1 - 7 नवंबर, 2021



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 30-10-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

**हम समय का आत्मकल्याण की दृष्टि से
यथोचित उपयोग करें : आचार्यश्री महाश्रमण**



भीलवाड़ा, २३ अक्टूबर, २०२१

हमारी ज्ञान चेतना को उज्ज्वल बनाने वाले परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि सुयगड़ो आगम में शास्त्रकार ने बंधन की बात प्रथम श्लोक में कही थी। बंधन में हिंसा और परिग्रह इन दो तत्त्वों का वर्णन चल रहा है। प्रस्तुत श्लोक में शास्त्रकार ने कहा है कि एक बात पर ध्यान देना चाहिए कि धन और अपने सगे भाई-बहन।

गृहस्थ के पास धन और भाई-बहन हो सकते हैं। माँ-बाप से नैकट्य हो सकता है, उनके अलावा भाई-बहन का भी अपना नैकट्य होता है। धन के प्रति ममत्व भी गृहस्थ के मन में हो सकता है। पर धन हो या भाई-बहन ये त्राण नहीं दे सकते। एक सीमा तक सहयोग में भूमिका अदा कर सकते हैं। अंतिम त्राण नहीं दे सकते हैं।

कर्म जब उदय में आते हैं, तब स्वयं को ही भोगने पड़ते हैं। व्यावहारिक संदर्भ में त्राण दे सकते हैं, पर निश्चय के संदर्भ में खुद के कर्म उदय आने पर दूसरे कितने त्राण बन सकते हैं। काल सौकरिक कसाई की मृत्यु के पश्चात उसके परिवार के मुखिया के रूप में उसके बेटे का नियुक्त करने का प्रसंग समझाया। सुलस ने कहा कि मैं रोज ५०० भैंसों का वध नहीं कर सकता। हिंसा तो अपने आपमें नरक का हेतु है।

पारिवारिक जनों के कहने पर भी सुलस ने कुल्हाड़ी का वार भैंसे पर न कर स्वयं के पैर पर किया और बोला मेरे पैरों में पीड़ा हो

रही है, आप लोग इसका हिस्सा बँटाइए। दुःख में सहभागी बनें। पारिवारिकजन बोले-दुःख को बाँटा नहीं जा सकता, खुद को ही भोगना पड़ता है। सुलस बोला-तो आपने कैसे कहा था कि भैंसे को मारने पर जो पाप लगेगा उसका हिस्सा हम बँटा लेंगे।

सुलस बोला-कोई पाप का हिस्सा बँटा ही नहीं सकता तो मैं पाप कर्म क्यों करूँ? पीड़ा होती है, तो सगा भाई भी कितना बँटा सकता है, स्वयं को ही भोगना पड़ता है। गृहस्थों के पास करोड़ों की धन-संपत्ति हो सकती है, पर बीमारी में तो डॉक्टर भी उत्तर दे देता है। वो करोड़ों की धन-संपत्ति क्या काम आए? वो वेदना दूर नहीं कर सकती।

इस बात का चिंतन करना चाहिए कि धन या भाई-बहन त्राण नहीं दे सकते। दूसरी

बात है कि जीवन दौड़ रहा है, मृत्यु की ओर। इसका हम अनुप्रेक्षण-चिंतन करें। जैसे सर्दी के दिन भागे जा रहे हैं, वैसे ये जीवन भागा जा रहा है। जन्मदिवस आता है, इसकी एक सच्चाई यह भी है कि मेरा एक साल तो गया। फिर क्या करें?

इसके लिए कर्मों को तोड़ने की साधना करें। बंधन को तोड़ने की साधना करें। वह साधना करते हैं, तो फिर वह जीवन भागे तो भागे। दिन-रात की ६० घड़ियाँ होती हैं। कितनी घड़ियाँ धर्म-ध्यान में लगाते हैं। २४ मिनट की एक घड़ी। गृहस्थ सोचे इन साठ घड़ियों में कुछ हिस्सा धर्म में लगाता हूँ या नहीं। शेष दो घड़ी का समय भी साधना के लिए निकालते हैं, तो अच्छी बात है।

(शेष पृष्ठ २ पर)



**अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश
अपेक्षित होता है : आचार्यश्री महाश्रमण**



भीलवाड़ा, २२ अक्टूबर, २०२१

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि रात्रि का समय है, मुख्य प्रवचन कार्यक्रम रात्री में हो रहा है। दिन बीत गया, रात आ गई। रात बीतेगी दिन आ जाएगा। यह काल का क्रम चल रहा है। महीने में दो पक्ष होते हैं। एक कृष्ण पक्ष और दूसरा शुक्ल पक्ष। इसी प्रकार अहोरात्र के दो हिस्से कृष्ण और शुक्ल होते हैं। दिन को शुक्ल और रात्रि को कृष्ण के रूप में मान लें।

हर दिन ये दो विभाग आते हैं। कवि ने कहा है कि हर महीने में दो पक्ष हैं जिन्हें कृष्ण और शुक्ल कहा गया है। जबकि जितनी चाँदनी शुक्ल पक्ष में होती है, उतनी ही कृष्ण पक्ष में आती है। पर यश पुण्याई से मिलता है। पर शुक्ल पक्ष-कृष्ण पक्ष इसलिए कहा गया है कि कृष्ण पक्ष में अंधकार की वर्धमानता होती है और शुक्ल पक्ष में चाँदनी की वर्धमानता होती है। वो अभिमुखता का अंतर पड़ जाता है। जिधर अभिमुखता है, उसका महत्त्व है।

आदमी के जीवन में कभी अंधकार आ सकता है, कभी प्रकाश आ सकता है। जब जीवन में निराशा का कुहासा आ जाता है, तो एक प्रकार का अंधकार सा आ जाता है। जब चित्त में प्रसन्नता है, आशा की किरण है, उत्साह से आदमी कार्य करता है, आगे बढ़ता है, तो वह एक प्रकाश का समय होता है। आदमी के जीवन के आचरणों में भी कहीं अंधेरा है, कहीं प्रकाश है।

जीवन को अध्रुव कहा गया है। जीवन आदमी का अशाश्वत है। जीवन के बाद अगला जीवन प्राप्त होता है। मनुष्य यह सोचे कि मृत्यु के बाद मेरा क्या होगा? आगे

मैं कहाँ जा सकता हूँ, आगे के लिए मैं क्या कर रहा हूँ। वर्तमान जीवन तो छोटा सा है। देवगति और नरक गति का तो कितना लंबा आयुष्य है। पता नहीं आगे कितने जन्म लेने पड़ सकते हैं, आगे तो लंबा काल है। इस छोटे से काल का उपयोग लंबे काल के संदर्भ में भी करें। वर्तमान भी अच्छा रहे और आगे के जन्म भी अच्छा रहे।

आगे जन्म-मरण कम हो जाए, मोक्ष हमें जल्दी मिल जाए। यह एक प्रसंग से समझाया। भावी प्राणी को तो सीमित जन्म लेने पड़ते हैं, पर अभव्य को तो अनंत-अनंत जन्म लेने पड़ते हैं। सीमित जन्म हो गए तो मुक्ति तो शीघ्र हो सकेगी। हमें जन्म-मरण ज्यादा न करना पड़े इसके लिए साधना, प्रयास, पुरुषार्थ करना चाहिए। छोटे नजदीक के देवलोकों में जाना इसलिए लाभदायी हो सकता है कि वहाँ का आयुष्य ऊपर के देवलोकों से बहुत कम है।

देवलोक कितना ऊँचा मिलेगा एक बात है, मुक्ति कितनी जल्दी मिलेगी वो एक बात है। हमें आगे के बारे में भी सोचना चाहिए। आगे का जीवन हमारा कैसे अच्छा रहे, उसके लिए वर्तमान पर ध्यान देना जरूरी है। हमारा वर्तमान जीवन वर्तमान के लिए ही न हो, हमारा वर्तमान जीवन बहुततया तो भविष्य के लिए हो।

मोक्ष प्राप्ति के लिए मोक्ष मार्ग को जानकर भोगों से निवृत्त बनें। भोगों को छोड़कर योग के मार्ग पर चलो। त्याग के पथ पर चलो। भोग अधर्म है, त्याग धर्म है। जीवन में जितना त्याग-तप का क्रम आगे बढ़ता है, सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य की साधना अच्छी होती है, तो आदमी सिद्धि गति की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

भगवान महावीर निर्वाण दिवस : दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

---: तैरापंथ टाइम्स परिवार :---



गृहस्थ परिग्रह का अल्पीकरण करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १७ अक्टूबर, २०२१

आगम ज्ञाता परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा देते हुए फरमाया कि सूर्यगडो आगम में बोधि प्राप्ति, बंधन और उसे तोड़ने की बात बताई गई है। बंधन अनेक हो सकते हैं। एक बड़ा बंधन है, परिग्रह। परिग्रह के साथ ममत्व, आसक्ति और मूर्च्छा की बात है। आदमी पदार्थों और प्राणी में भी मूर्च्छित हो सकता है।

चेतनावान पदार्थ और चेतना शून्य पदार्थ इनमें जो ममत्व भाव रखता है। परिग्रह की बुद्धि रखता है, दूसरों के परिग्रह का अनुमोदन करता है, इस तरह परिग्रह से दत्त हुई चेतना वाला जो मनुष्य होता है, वह दुःख से मुक्त नहीं हो सकता।

धन-पदार्थ नहीं मिलने की स्थिति भी आदमी को दुःखी बना देती है। प्राप्त वस्तु चली गई तो दुःखी। प्राप्त वस्तु पास में पड़ी है, उसकी सुरक्षा के लिए भी कई बार तनाव रहता है, यह एक प्रसंग से समझाया कि जो खतरा था वो मैंने नदी में फेंक दिया। अतृप्ति का भी शांति भंग करने में हाथ हो सकता है।

चार बातों से परिग्रह दुःख पैदा कर सकता है। अप्राप्त है, तो पाने की लालसा, प्राप्त पास में है, तो उसकी सुरक्षा की दृष्टि से दुःख या तनाव प्राप्त है, वो नष्ट हो जाए तो दुःख। चौथा है—अतृप्ति का दुःख और मिले-और मिले। जो परिग्रह में रत है, ममत्व है, वो व्यक्ति परिग्रह से मुक्त नहीं बन सकता।

श्रावक बारह व्रतों में पाँचवाँ व्रत है—इच्छा-परिमाण। यह एक तरह से परिग्रह से अपरिग्रह की ओर गति है। गृहस्थ है, पूर्णतया तो परिग्रह न छोड़ सके, पर इच्छाओं का परिमाण कर ले। पदार्थ का परिमाण कर ले। यह इच्छा-परिमाण दुःख-मुक्ति की ओर गति है।



हिंसा और परिग्रह दोनों जुड़े हुए हैं। परिग्रह है तो हिंसा की बात हो सकती है। मनुष्य यह प्रयास करे कि जीवन जीने के लिए पदार्थ चाहिए पर ममत्व बुद्धि-आसक्ति कम करो। उम्र होने पर तो आदमी को अपरिग्रह पर ध्यान देना चाहिए। शरीर के प्रति भी ममत्व हो सकता है। शरीर की पकड़ को कम करो। पदार्थों की पकड़ भी कम करो, उनमें आसक्ति मत रहो।

परिग्रह का जो त्याग करता है, वो चेतना को ऊर्ध्वारोहण की ओर ले जा सकता है। आचार्य तुलसी ने तो आचार्य-पद का भी विसर्जन कर दिया। पद भी परिग्रह हो सकता है। पद के लिए लालसा रहती है। पद, पैसा और प्रतिष्ठा ये ऐसी चीजें हैं कि इनका परिग्रह हो जाता है, आदमी दुःखी बन जाता है।

परिग्रह का संचय करने वाला,

परिग्रह की अनुमोदना करने वाला, मूर्च्छा-ममत्व बुद्धि रखने वाला है, वह व्यक्ति दुःख से मुक्त नहीं होता। आप लोग गृहस्थ हैं, परिग्रह का जितना अल्पीकरण संभव हो सके, वो करने का प्रयास करें। वृद्धावस्था आ जाए तो परिग्रह का अल्पीकरण करें।

कई बार आदमी कहता है, मुझे पद लेने का त्याग करा दो, पर कई बार पद भी काम का होता है। सब पद छोड़ देंगे तो समाज-देश को कौन संभालेगा। पद पर है, तो लोग बात को मानेंगे। आदमी परिग्रह में विवेक रखे, ममत्व को छोड़े। परिग्रह का त्याग करने की दिशा में आगे बढ़े, तो दुःख-मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि पूज्यप्रवर के प्रवचन से कितने लोग बदल रहे हैं। अनेक लोगों को नया बोध-नया

जीवन मिलता है। मनुष्य जन्म जो दुर्लभ है, हमें सुलभ है, इसका हम कितना लाभ उठा सकें, यह हमारे चिंतन का विषय होना चाहिए। इस संसार में तीन चीजें बहुत दुर्लभ हैं। वे भाग्य से या देवकृत उपलब्ध होती हैं। वे हैं—मनुष्य जन्म, मुमुक्षा का भाव और महापुरुषों का सान्निध्य।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि प्रतिसंस्लीनता का एक प्रकार है—स्पर्श। स्पर्श से मन में चंचलता आ जाती है और मन को प्रिय लगती है। साधना और धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ने वाला व्यक्ति संस्लीनता के बारे में चिंतन करेगा कि मैं इंद्रियों की प्रतिसंस्लीनता करूँ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हम अपने आपको अच्छे कार्यों में व्यस्त रखें तो दुःखों से मुक्त रह सकते हैं।



अर्थ और काम पर धर्म का... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

परम पूज्य आचार्य भिक्षु और जयाचार्य के साहित्य को देखें, कितना ज्ञान भरा है। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी का कितना साहित्य है। स्वाध्याय करने से कई बार बड़ा आलोक मिलता है। पथ दर्शन अच्छा मिल सकता है, जीवन की शैली अच्छी हो सकती है। आदमी का दृष्टिकोण अच्छा हो सकता है। आदमी अध्यात्म और मोक्ष की दिशा में अच्छी गति-प्रगति भी कर सकता है।

गृहस्थ के जीवन में अर्थ भी अपेक्षित होता है। चार पुरुषार्थ बताए गए हैं—अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष। अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश रहे। अर्थ और काम रथ के दो पहिए हैं, धर्म सारथी के रूप में हैं। हम अपने जीवन में वर्तमान को भी देखें और भविष्य को और विशेषतया देखें ताकि हमारा यह वर्तमान भविष्य का भावित करने वाला बन सके।

आज भी पूज्यप्रवर ने नगर भ्रमण हेतु चतुर्मास स्थल से विहार किया। पूज्यप्रवर ने कोठारी विद्या स्कूल में विद्यार्थियों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करवाया। संसारपक्षीय संस्था में मुनि प्रतीक कुमार जी ने गुरु चरणों में प्रस्तुति दी। पूज्यप्रवर बापनगर के महाप्रज्ञ सेवा संस्थान में पधारें। आजादनगर के महाप्रज्ञ भवन में पूज्यप्रवर का पधारना हुआ।

हम समय का आत्मकल्याण की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कम से कम एक सामायिक तो रोज हो जाए। शनिवार की ७ से ८ की भी सामायिक हो। जहाँ भी रहें समय निकालें। कुछ समय स्वयं के लिए निकालें। समय बीत रहा है। गीत में भी सुंदर कहा गया है—सजग बनो बीती जा रही घड़ी। गीत का सुमधुर संगान किया। शास्त्रकार ने कहा है कि जीवन दौड़ रहा है, समय बीत रहा है। हम समय का आत्म-कल्याण की दृष्टि से यथोचित उपयोग करने का प्रयास करें, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। पूज्यप्रवर की सन्निधि में टीपीएफ के तत्त्वावधान में मेधावी सम्मान समारोह-२०२१ का आयोजन हुआ। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि साधक संकल्प करता है कि कभी षट्-जीवनिकाय की हिंसा नहीं करूँगा। अप्रमाद के प्रायश्चित्त के लिए साधु या साधक मिच्छामि दुक्कडं बोलता है। प्रायश्चित्त पाप की निवृत्ति के लिए किया जाता है।

टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख ने अपनी भावना रखी। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया ने पुलिस राष्ट्रीय गौरव रक्षक श्रीचरणों में अर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि गुरु से ज्ञान ग्रहण करना विशिष्ट बात होती है।

◆ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

— आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

हेल्थ चेकअप एंड एंटीबॉडी कैंप

पूर्वाचल।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, पूर्वाचल-कोलकाता द्वारा अस्तित्व कॉम्प्लेक्स में एक हेल्थ चेकअप एंड एंटीबॉडी कैंप का आयोजन आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा किया गया। इस कैंप में कुल 9३ लोगों ने फुल बॉडी हेल्थ चेकअप करवाया।

एटीडीसी के प्रभारी नरेंद्र छाजेड़, निवर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा, अध्यक्ष विकास सिंधी, मंत्री धीरज मालू, उपाध्यक्ष-प्रथम अमित बैद और एटीडीसी के संयोजक एवं कार्यसमिति सदस्य हेमंत बैद व अन्य सदस्यगण उपस्थित रहे।

फिट युवा-हित युवा लिलुआ।

बाली-बेलुर प्रेक्षावाहिनी तथा तेयुप, लिलुआ के संयुक्त तत्वावधान में फिट युवा-हित युवा के अंतर्गत प्रेक्षाध्यान का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में रखा गया। जिसकी शुरुआत नवकार मंत्र द्वारा हुई। प्रशिक्षक राकेश सिंधी एवं अरुण नाहटा द्वारा फिट युवा-हित युवा के अंतर्गत प्रेक्षाध्यान से कैसे बदले जीवन धारा प्रेक्षाध्यान साधना द्वारा हमें मूल्यवान जानकारी मिली।

संयोजक दीपक बागरेचा, राहुल चोपड़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया। आभार ज्ञापन तेयुप, लिलुआ के मंत्री गौरव घोड़ावत ने किया। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही।

रक्तदान शिविर

राजसमंद।

तेयुप कांकरोली के तत्वावधान में ५० फिट रोड स्थित प्रज्ञा विहार के प्रांगण में तेरापंथ धर्मसंघ के आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु की तेरस तिथि एवं नवरात्र अनुष्ठान स्थापना के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर तथा मधुकर रक्तपेढी राजसमंद के सहयोग से आयोजित किया गया। मुनि संजय कुमार जी स्वामी, मुनि प्रकाश जी एवं मुनि सिद्ध जी के मंगल आशीर्वाद से ये रक्तदान शिविर आयोजित हुआ।

संयोजक शैलेश चोरड़िया ने बताया कि डॉ० मीना के नेतृत्व में आर०के० हॉस्पिटल की टीम ने काम किया। गणमान्य जनों की उपस्थिति रही।

कांकरोली महिला मंडल, कन्या मंडल एवं किशोर मंडल की उपस्थिति

रही। किशोर मंडल प्रभारी अर्पित बाफना और संयोजक अखिल बाफना भी अपनी टीम के साथ उपस्थित रहे। रक्तदान कार्यक्रम के संयोजक शैलेश चोरड़िया एवं नितिन सोनी ने शिविर की जानकारी दी। इसमें लगभग ५० यूनिट रक्त का लक्ष्य प्राप्त किया गया।

सेवा कार्य

सूरत।

अभातेयुप के त्रिआयामी सेवा-संस्कार-संगठन कार्यों के अंतर्गत तेयुप द्वारा सेवा के क्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा किए गए पथ संचालन में नींबू पानी और पानी की सेवा का लाभ लिया गया। इस अवसर पर तेयुप सूरत के अध्यक्ष गौतम बाफना, उपाध्यक्ष महेश संकलेचा के साथ पदाधिकारी और कार्यकारिणी सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। सभी ने इस सेवा कार्य का लाभ लिया और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा तेयुप को साधुवाद प्रेषित किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेयुप के मानव सेवा को समर्पित 'मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव' आयाम के अंतर्गत तेयुप द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन एम०बी०आर० शांतीला अपार्टमेंट, मैसूर रोड में जीवरक्षा वालंटरी ब्लड बैंक के सहयोग से किया गया। सामुहिक नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेयुप उपाध्यक्ष अमित नौलखा ने पधारे हुए सभी का स्वागत किया।

तेरापंथ सभा राजराजेश्वरी नगर अध्यक्ष मनोज डागा ने कहा कि इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि रक्त देने वाला और रक्त पाने वाला कौन है—लक्ष्य है सफलतापूर्वक जरूरतमंद रोगियों की तत्काल जरूरत को पूरा करने का। शिविर में ३४ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। उपाध्यक्ष-द्वितीय धर्मे श नाहर, सहमंत्री-प्रथम वरुण पटावरी एवं एमबीडीडी के स्थानीय संयोजक विकास छाजेड़ एवं कार्यसमिति सदस्यों की उपस्थिति रही। शिविर में कार्यकारिणी सदस्य मनीष पगारिया का योगदान रहा। तेयुप द्वारा रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया तथा जीवरक्षा वालंटरी ब्लड बैंक ने तेयुप द्वारा इस कैंप के आयोजन के लिए सम्मानित किया। संयोजक विकास छाजेड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

दीपावली पूजन कार्यशाला

वापी।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित दीपावली पूजन कार्यशाला का आयोजन तेयुप द्वारा अभातेयुप सदस्य एवं मुख्य संस्कारक डी श्रेणी संस्कारक संजय भंडारी, अणुव्रत समिति के मंत्री एवं संस्कारक विवेक बोथरा, तेयुप अध्यक्ष एवं संस्कारक कुलदीप कोठारी की उपस्थिति में साध्वी चरितार्थप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया।

नवकार मंत्र के उच्चारण के साथ इस कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। अभातेयुप सदस्य संजय भंडारी ने सभी महानुभावों का स्वागत-अभिनंदन किया। दीपावली पूजन कार्यशाला करवाने हेतु संस्कारक कुलदीप कोठारी ने अर्थ सहित दीपावली पूजन विधि के बारे में जानकारी दी। मुख्य संस्कारक संजय भंडारी ने मंगलभावना यंत्र की स्थापना करते हुए मंगल यंत्र के महत्त्व को समझाया। संस्कारक विवेक बोथरा ने संस्कार विधि में लगने वाली उचित सामग्री के बारे में विशेष जानकारी दी।

साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने जैन संस्कार विधि के महत्त्व से सभी को अवगत कराया एवं दीपावली जैन संस्कार विधि से मनाने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री जी के मंगलपाठ से कार्यक्रम समापन हुआ।

जैन विद्या कार्यशाला प्रमाण पत्र वितरण

पेटलावद।

अभातेयुप व समण संस्कृति संकाय के संयुक्त तत्वावधान में जैन विद्या कार्यशाला परीक्षा (तीन बातें ज्ञान की पुस्तक पर आधारित) आयोजित हुई थी। उक्त परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले संभागियों को प्रमाण पत्र केंद्र से तेयुप पेटलावद को प्रेषित किए गए। मुनि वर्धमान कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा उक्त परीक्षा में सफलता प्राप्त संभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। जिसमें रत्नप्रभा कोटड़िया, सीमा पटवा, प्रीति पटवा, रेखा पालरेचा, पुष्पा पालरेचा, मोनिका गादिया, ममता बम्बोरी, मनीषा पटवा व मुदित पटवा ने सफलता अर्जित की।

प्रमाण पत्र का वितरण समण संस्कृति संकाय के सुनील भांगू द्वारा किया गया। तेरापंथ युवक परिषद, पेटलावद की ओर से अध्यक्ष रूपम पटवा उपस्थित थे। संचालन फूलचंद कांसवा द्वारा किया गया।

मंगलभावना समारोह

दिल्ली।

शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में मुमुक्षु प्रेक्षा का मंगलभावना कार्यक्रम गोयल श्रद्धा निवास, ग्रीन पार्क में आयोजित हुआ। साध्वी शशिरेखा जी ने अपने उद्बोधन में मुमुक्षु प्रेक्षा को प्रेरणा देते हुए कहा कि विनय और विवेक सफलता की कुंजी है। आचार्य तुलसी के अवदान ज्ञानशाला, साध्वी शिक्षा, स्त्री शिक्षा आदि का उल्लेख करते हुए कहा कि संयम साधना के कठोर मार्ग पर चलने के लिए समर्पण और अनुशासन का सदैव ध्यान रखना।

साध्वी शीतलयशा जी ने वैराग्य काल के संस्मरण को याद किया। साध्वी रोहितप्रभा जी व साध्वी मंदारयशा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी कांतप्रभा जी द्वारा रचित गीतिका का साध्वीवृंद ने संगान किया।

दिल्ली सभा के महामंत्री डालमचंद बैद, पूर्वाध्यक्ष गोविंद बाफना, संस्कारक सुशील डागा, तेयुप दिल्ली के पूर्वाध्यक्ष राजेश भंसाली, महिला मंडल पूर्वाध्यक्ष निर्मला कोठारी ने भावाभिव्यक्ति दी। अमिता बैद ने मंगलाचरण व दिल्ली सभा के मंत्री हीरालाल गेलड़ा ने गीत का सामुहिक संगान करवाया। वरिष्ठ श्राविका समाज ने मुमुक्षु का माल्यार्पण से अभिनंदन किया।

माता-पिता अरुण-ममता संचेती ने अपने भाग्य को सराहते हुए प्रेक्षा के वैराग्य भाव का बीजारोपण में ज्ञानशाला से मिले संस्कार व परिवार का धर्मसंघ के प्रति अनन्य आस्था व श्रद्धा को माना। मुमुक्षु प्रेक्षा ने आचार्यश्री के प्रवचनों को अपने संकल्प शक्ति के विकास का माध्यम माना, ज्ञानशाला के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की व संस्था में प्रवेश को अपना भाग्योदय माना। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष प्रदीप खटेड़ व विचारविद्युक्त के साथ आभार मंत्री माया दुगड़ ने किया।

मन को निर्मल बनाए रखने का...

(पृष्ठ 92 का शेष)

मन एक ऐसा तत्त्व है, जो हमारे उत्थान और पतन का एक कारण बनता है। हम अपने मन को उत्थान का कारण बनाए रखें न कि पतन का। जब-जब हमारे मन में शुभ परिणाम रहते हैं, तो ये परिणाम उत्थान की ओर ले जाने वाले बन जाते हैं। जब-जब हमारे मन में अशुभ परिणाम रहते हैं, ये परिणाम हमें पतन की ओर ले जाने वाले बन सकते हैं।

चार गतियों के आयुष्य बंध के जो कारण हैं, हम उनमें देख लें। नरक और तिर्यन्च आयुष्य के जो चार-चार कारण हैं, वे अशुभ परिणाम वाले कारण हैं। मनुष्य और देवगति आयुष्य बंध के जो चार-चार कारण हैं, वे शुभ परिणामों वाले कारण हैं। हिंसा और परिग्रह की तीव्रता है, वो नरक गति में ले जाने वाले हैं। छल-कपट के परिणाम तिर्यन्च गति के कारण हैं। जहाँ विनम्रता, अनिर्घ्या है, वे मनुष्य गति के आयुष्य के कारण हैं। जहाँ त्याग-तपस्या के कारण हैं, वे देवगति के कारण बन जाते हैं। हमारे में शुभ परिणाम रहे, ऐसा हमारा प्रयास रहे। कर्मों के उदय से मन में खराब परिणाम आ सकते हैं, हम उनसे मुकाबला करें। अच्छे मंत्र का पाठ करें तथा मन ही मन ये घोषणा कर दें कि ये विचार मेरे नहीं हैं। मैं खराब विचारों की निंदा करता हूँ। तो दुर्मन को परास्त करने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। साधना करते-करते आदमी मन से पार होने का भी अभ्यास कर ले।

अपने मन में राग-द्वेष युक्त दूषित विचार न आए। अध्यवसाय, लेश्या, ध्यान, परिणाम ये गहरे विचार मन का परिवार है। सारे शुभ विचार कल्याणकारी हैं। मन हमारा निर्मल-शुभ रहे। शुभ है, तो शांति का अनुभव हो सकेगा।

अब चातुर्मास का अंतिम महीना है। श्रावक-श्राविकाएँ इसका अधिक से अधिक लाभ उठा सके, ऐसा प्रयास करें। हम सभी मन को निर्मल बनाए रखने का प्रयास करें। मन निर्मल हो तो कल्याण हो सकता है, मन और भावों को शुद्ध बनाने से ही पाप दूर हो सकते हैं। आत्मा की नदी में नहाने से हमारी चेतना शुद्ध हो सकेगी।

मन रूपी जल में मोहनीय कर्म रूपी कीचड़ पड़ जाता है, तो मन गंदा बन जाता है। हम मन की निर्मलता को साधने का, प्राप्त करने का प्रयास करते रहें, भाव शुद्ध रहें तो हम उत्थान की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

पूज्यप्रवर ने आज प्रातः भीलवाड़ा शहर भ्रमण हेतु चतुर्मास स्थान से विहार किया। मार्ग में स्थानकवासी वर्धमान संघ की साध्वियों ने दर्शन किए। पूज्यप्रवर नागौरी गार्डन तेरापंथ भवन पधारे। थाना कोतवाली में पूज्यप्रवर का पदार्पण हुआ। अणुव्रत साधना स्कूल पधारे। वहाँ पर अमृत प्रेरणा प्रदान करवाई।

मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हम मूल को छोड़कर नश्वर हैं, उसके लिए समय लगता है, तो व्यक्ति अपने साथ में न्याय नहीं करता। हमें आत्मा के लिए समय निकालना चाहिए।



स्वस्थ समाज की रचना के लिए अहिंसक विचारधारा बहुत जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, 9 अक्टूबर, 2021

सुखों के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन शास्त्रों की प्राकृत अर्द्धमागधी और श्लोकों के माध्यम से, कहीं पद्य के माध्यम से, विभिन्न निर्देश, विभिन्न जानकारियाँ आगम वाङ्मय में प्राप्त होती हैं। यहाँ सूयगड़ों के प्रथम अध्ययन में बंधन को जानने और उसको तोड़ने का मुख्य निर्देश दिया गया है कि जानो बंधन क्यों है? फिर बंधन को तोड़ने का प्रयास करो।

बाहर का बंधन भी होता है। किसी आदमी को बाँध दिया है, वह भी छोटा बंधन है। बड़ा बंधन है, जिसकी चर्चा यहाँ शास्त्र में की गई है, वह परिग्रह का बंधन है। परिग्रह, मूर्च्छा, आसक्ति से आदमी बंध जाता है। वह बड़ा बंधन होता है। परिग्रह से जुड़ा हुआ एक दूसरा बंधन और है, वह है—हिंसा।

परिग्रह और हिंसा इन दोनों का आपस में संबंध है। हिंसा कार्य के रूप में सामने आती है, परिग्रह उसका कारण बनता है। परिग्रह है, तो हिंसा को छोड़ना मुश्किल प्रतीत हो रहा है। हिंसा और परिग्रह एक वस्त्र के दो सिरे के समान हैं। परिग्रह को पकड़कर रखेंगे तो हिंसा भी



साथ में रहेगी।

अहिंसा परमो धर्मः कहा जाता है, तो अपरिग्रह भी बड़ा धर्म है। लोभ है, वो हिंसा को जन्म देने वाला बन जाता है। तभी कहा गया है कि पाप का बाप लोभ होता है। शास्त्रकार ने बताया है कि परिग्रह

ही मनुष्य प्राणियों का स्वयं हनन करता है दूसरों से हनन भी करा देता है और हनन करने वाले का अनुमोदन कर देता है। इस प्रकार हिंसा में प्रवृत्त आदमी अपने बैर को बढ़ाता है। वह दुःख से मुक्त नहीं हो सकता।

बंधन को तोड़ना है, तो परिग्रह को भी तोड़ना होगा, हिंसा के बंधन को भी तोड़ना होगा। परिग्रह का बंधन टूट गया तो हिंसा का बंधन अपने आप ही लगभग संपूर्णतया खत्म हो जाएगा।

राग और द्वेष हिंसा के बीज हैं। परिग्रह इसको उत्तेजित करने वाला है। आदमी ध्यान दे कि मैं परिग्रह से कितना विरक्त हो सकता हूँ, हिंसा को कितना छोड़ सकता है। संपूर्णतया हिंसा और परिग्रह को छोड़ना देहधारी के लिए मुश्किल है, परंतु अल्पीकरण किया जा सकता है।

बारह व्रतों में स्थूल प्राणातिपात और इच्छा-परिमाण की बात आती है और

भोगोपभोग परिमाण के सीमा करने की बात आती है। यह एक प्रसंग से समझाया कि परिग्रह की चेतना जागने से किस तरह हिंसा हो जाती है। अर्थ-अनर्थ का कारण बन सकता है। ऐसे धन को तो मानो धिक्कार है।

अणुव्रत आंदोलन में भी अहिंसा की बात है। हर आदमी गार्हस्थ्य में भी अहिंसा का अनुसरण करें। अहिंसा से समाज भी सुरक्षित रह सकता है। कभी आदमी प्रेम-सौहार्द कर लेता है, तो कभी आदमी की आकृति में राक्षस भी दिखाई देता है। स्वस्थ समाज की रचना के लिए अहिंसा की विचारधारा, अहिंसा का दर्शन, अहिंसा का तत्त्व बहुत जरूरी होता है।

अहिंसा को राष्ट्र के संदर्भ में देखें। पड़ोसी राष्ट्र मैत्री से रहें तो कितना अच्छा लगता है। पड़ोसी-पड़ोसी शांति से रहे। हिंसा दुःख को, अशांति को पैदा करने वाली होती है। आचार्य महाश्रमण जी ने अहमदाबाद में

2002 की हिंसा में कहा था कि हिंसा में रहोगे तो पिछड़ जाओगे, अहिंसा में रहोगे तो विकास हो सकेगा। शास्त्रकार ने बताया है कि हिंसा से बैर बढ़ता है। बैर से बैर शांत नहीं होता। अबैर से बैर शांत हो सकता है। हम मैत्री-अहिंसा के द्वारा हिंसा को बंध करने का प्रयास करें। अहिंसा के पथ पर चलें, यह दुःख मुक्ति का मार्ग है। मोक्ष का मार्ग है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि जो व्यक्ति पराधीन होता है, उसे कभी भी किसी प्रकार का कोई सुख नहीं होता है। साधना का संबंध किसी व्यक्ति के साथ नहीं होता है, उसका संबंध तो अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ में होता है।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि मुहूर्त भर ही जीयो, पर अंगारे की तरह प्रज्वलित बनकर जीयो। धूर्ण की तरह लंबा जीवन जीना श्रेयस्कर नहीं होता है। जलती हुई अग्नि पर कोई पैर नहीं रखता है, पर जब वह बुझ जाती है, तो पैरों से कुचली जाती है।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में अणुव्रत लेखक संगोष्ठी, अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में शुरू हुआ। अणुविभा ने उत्कृष्ट व नैतिक लेखन के लिए अणुव्रत लेख पुरस्कार-2021 डॉ० वेदप्रताप वैदिक को एवं 2020 का लेखक पुरस्कार राजस्थान के मुख्यमंत्री के विशेषाधिकारी डॉ० फारूख अफरीदी को दिया गया। अणुविभा के अध्यक्ष संचय जैन ने अपनी भावना रखी। उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने प्रशस्ति-पत्र का वाचन किया। पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति व स्थानीय अणुव्रत समिति द्वारा भी पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि व्यक्ति का साधना स्तर ऊँचा होता है, तब वह शक्ति से संयोजित होता है।



मन को निर्मल बनाए रखने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, 29 अक्टूबर, 2021

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हम मनुष्य हैं। मनुष्यों में भी हम संज्ञी मनुष्य हैं। सिद्धांत है कि मनुष्य दो प्रकार के होते हैं—असंज्ञी मनुष्य और संज्ञी मनुष्य। समुच्छिन्न मनुष्य या गर्भज मनुष्य। जिन मनुष्यों के मन नहीं होता वे असंज्ञी मनुष्य होते हैं। जिनके मन होता है, वे संज्ञी या गर्भज मनुष्य होते हैं।

मन एक ऐसा तत्त्व है, वो अपने आपमें एक लब्धि है, शक्ति है। मनन से ऐसा निष्कर्ष सामने आ रहा है कि बहुत बढ़िया काम मन वाला प्राणी ही कर सकता है। बहुत घटिया काम भी मन वाला प्राणी ही कर सकता है। जिन प्राणियों के मन नहीं होता वे बड़ा पाप भी नहीं कर सकते और बड़ा धर्म या पुण्य का बंध भी नहीं कर सकते। इसलिए मन एक बहुत महत्वपूर्ण शक्ति होती है।

विचारणीय बात है कि आदमी कैसे मन का बढ़िया उपयोग करे। मन ही मन चिंतन करके प्राणी सप्तम नरक योग्य आयुष्य का बंध कर लेता है। मन ही मन चिंतन करते-करते एक प्राणी देवगति में जाने योग्य आयुष्य का बंध कर लेता है। मन को सुमन या दुर्मन भी बनाया जा सकता है।

नारकीय जीवों में भी मन होता है। तिर्यन्व के भी दो प्रकार हैं—संज्ञी और असंज्ञी तिर्यन्व। मनुष्यों और तिर्यन्वों में ये दो प्रकार हैं, परंतु नारकीय जीव के दो भेद नहीं होते। देवगति में भी सिर्फ संज्ञी ही होते हैं। नारकीय और देव संज्ञी तो हैं, पर संज्ञी होने पर भी नारकीय जीव इतना पुण्य बंध नहीं कर सकते कि वे देवगति में चले जाएँ। देव इतना पाप नहीं कर सकते कि वे सीधे नरक में चले जाएँ। तिर्यन्व और मनुष्य ऐसे प्राणी हैं, जो अपने मन के द्वारा चारों गति में जा सकते हैं।

(शेष पृष्ठ 99 पर)



तेरापंथ धर्मसंघ के विरलतम आचार्य थे श्रीमद्जयाचार्य : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १६ अक्टूबर, २०२१

आचार्य भिक्षु के परस्पर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पंचम जयाचार्य अधिशास्ता के जन्मदिवस पर फरमाया कि आचार्य भिक्षु के ज्ञानात्मक उत्तराधिकारी जयाचार्य थे। भिक्षु स्वामी के आगमिक तात्त्विक ज्ञान के सहजतया उत्तराधिकारी जयाचार्य थे। भिक्षु स्वामी के भाष्यकार श्रीमद्जयाचार्य थे। आज से २१८ वर्ष पूर्व आज के दिन जयाचार्य ने इस धरती पर जन्म लिया था। वे संत पुरुष, आचार्य पुरुष थे। उनके ज्ञान का विधान विशिष्ट था। आगम ज्ञान के साथ उनका अपनी प्रतिभा, अतिश्रुत ज्ञान का क्षयोपशम था। उन्होंने कितने ग्रंथों का पद्यों की भाषा में प्ररूपण कर दिया। ऐसे व्यक्तित्वों का होना कहीं-कहीं विरलता लिए होता है।

छोटी-छोटी नवदीक्षित चारित्रात्माओं को प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि प्रयास करते-करते आगे बढ़ा जा सकता है। रोम एक दिन में नहीं बना था। सभी ज्ञान में, ध्यान में आगे बढ़े। अच्छे संस्कारों में विकास है। हमारे धर्मसंघ में प्रतिभा लग रही है। कितने साधु-साध्वियाँ, समणियाँ डिग्री युक्त हैं। डिग्री के बिना भी कईयों में अच्छा ज्ञान है।

प्रतिभा का योग है, अवसर मिलता है, तो आदमी आगे बढ़ सकता है। जैसे बीज है, तो उसको अनुकूल सामग्री और सींचन मिलता रहे तो वह वट-वृक्ष बन सकता है। हमारे धर्मसंघ में तत्त्वज्ञान का भी अच्छा विकास हुआ है। तपस्या का भी अच्छा क्रम चल रहा है। विकास को अवकाश है और आगे बढ़ें।



जयाचार्य को मुनि हेमराज जी सिरियारी वालों का योग मिल गया। पर मूल अपनी क्षमता-प्रतिभा उनमें थी। उनसे हम प्रेरणा ले सकते हैं। लगभग ३० वर्षों तक हमारे धर्मसंघ के आचार्य पद से खुद सुशोभित हुए। मुनि मधवा जैसे सहयोगी मिल गए। मैं उनके जन्म दिवस पर उनके वंदन-अभिनंदन करता हूँ। उन्होंने धर्मसंघ को अनेक अवदान दिए हैं। 'जय हो बल्लु सुत जग में, विश्रुत जय महाराज री'। गीत का सुमधुर संगान किया।

अप्रमत्त साधना के साधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुयगडो आगम की विवेचना करते हुए फरमाया कि आदमी जिस कुल में उत्पन्न होता है

और जिनके साथ रहता है, उनके साथ वह ममत्व भी रखता है। साथ रहने वाले परस्पर एक-दूसरे में मूर्च्छा कर लेते हैं। यों मूर्च्छा करने वाला अज्ञानी आदमी नष्ट होता रहता है, यानी दुःख मुक्त नहीं हो सकता है।

बंधन की बात प्रस्तुत सूत्र में बताई गई है। राग-द्वेष बंधन है उनसे जुड़े हुए दो बंधन हैं—हिंसा और परिग्रह। हिंसा और परिग्रह का परस्पर संबंध भी है। कारण व कार्य भाव भी देखा जा सकता है। परिग्रह के कारण से आदमी हिंसा में संप्रवृत्त हो जाता है। जहाँ साथ रहना होता है, वहाँ ममत्व भी हो सकता है और किसी रूप में हिंसा भी हो सकती है।

कुछ ममत्व तो स्वार्थ पर आधारित

होता है। स्वार्थ है तो प्रेम-मोह है। स्वार्थ पूर्ति नहीं तो वह स्नेह-प्रेम भी विच्छिन्न हो सकता है।

ज्ञान चेतना और सेवा चेतना की लौ नव दीक्षितों में प्रज्वलित होती रहे। विकास का प्रयास होता रहे। पुरुषार्थ पर आलस या निराशा का कुहासा न रहे। कंठस्थ ज्ञान का पुनरावर्तन होता रहे। चितारने में रात का समय अच्छा लगाया जा सकता है।

मोह या स्वार्थ एक सीमा तक हो सकता है। मोह नहीं तो स्वार्थ नहीं। एक-दूसरे पर ममत्व तो होता है, पर स्वार्थों का संबंध है, तब तक ममत्व है। स्वार्थ सिद्ध होने बंध हो जाते हैं, फिर वो ममत्व भी अपने आप टूट सकता है। संसार की

स्थितियाँ हैं। आदमी स्वार्थी होता है। आदमी अपनी साधना में, आत्म-कल्याण में ध्यान दें। हिंसा और परिग्रह से गृहस्थ भी मुक्त होने का प्रयास करे। आत्म कल्याण और कर्ममुक्ति की दिशा में आगे बढ़ने की साधना करें, यह काम्य है।

आश्विन शुक्ला चतुर्दशी—हाजरी वाचन

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आज आश्विन शुक्ला चतुर्दशी है, आज हमारे परम पूजनीय भिक्षु स्वामी की गीतिका का स्वाध्याय नवपदार्थ की ढाल का कर रहे थे। आश्रव जीव है, यह गीतिका है। उस समय मंगलवार था, आज भी मंगलवार है।

पूज्यप्रवर ने हाजरी के अंतर्गत मर्यादावली का वाचन किया। 'छूटे तो यह तन छूटे, शासन संबंध न छूटे, सबमें ऐसे संस्कार चाहिए। सत्य साकार चाहिए, उच्च आचार चाहिए, विमल व्यवहार चाहिए गुरुवर! हमको मर्यादा का आधार चाहिए।' गीत के पद्य का सुमधुर संगान किया। संघ में रहने से विकास का अवकाश रहता है। अनुशासन में रहना भी एक साधना है। अंतिम श्वास संघ में ही लेंगे, यह भावना रहे।

पूज्यप्रवर ने सम्यक्-दीक्षा ग्रहण करवाई।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि निरवद्य प्रवृत्ति हमारे कर्मों को हल्का करने में योगभूत बनती है। हमें अपने मन, वचन, काया को प्रतिसंस्लीन बनाना है। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन मुक्त होने के परम लक्ष्य के साथ जीवन जीएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २० अक्टूबर, २०२१

चंद्रमा के समान शीतलता प्रदान करने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि संसारी प्राणी के जीवन हो सकता है, सिद्धों के जीवन नहीं हो सकता। जीवन वह होता है, जो आयुष्य कर्म के योग से प्राप्त होता है और जिसे जीया जाता है। सिद्धों के आयुष्य कर्म नहीं होता है तो सिद्धों के जीवन भी नहीं होता है।

जीवन आदमी जीता है जीवन जीने का परम लक्ष्य यह हो सकता है कि ऐसा जीवन जीऊँ कि जीवन-मुक्त बन जाऊँ। सिद्धत्व को प्राप्त हो जाऊँ। सिद्धत्व को पाने के लिए ऐसा जीवन जीना अपेक्षित है, जिसमें जीवन-मुक्तता की तैयारी हो, जीवन मुक्तता की साधना हो।

मुक्ति और सिद्धि या मोक्ष का स्थान तो ऊपर है। जीवन में भी इतनी साधना हो जाए कि आदमी जीवन जीते हुए भी कुछ अंशों में मोक्ष का सा अनुभव कर ले। श्लोक में कहा गया है कि यही मोक्ष है, जो सुविदित है। जिसके विधान-आचरण बहुत उन्नत है। किसी तरह का घमंड नहीं और इंद्रिय-संयम को जिसने साध लिया। मानसिक, वाचिक और शारीरिक किसी तरह का विकास नहीं है। पर की आशा नहीं। पदार्थ की आकांक्षा-तृष्णा नहीं। ऐसे सुविदित लोग हैं, उनके लिए इसी जीवन में एक सीमा की मुक्ति उन्हें प्राप्त हो जाती है।

एक श्लोक में कहा गया है कि अतीत की व्यर्थ चिंताओं में-स्मृतियों में नहीं जाता, भविष्य की अनावश्यक कल्पना नहीं और जो कुछ प्राप्त है, उसमें

औदाशन्य-तटस्था-समता भाव। अतीत, वर्तमान और अनागत इन तीनों कालों के संदर्भ में जो मुक्त है, वह व्यक्ति जीवन-मुक्त होता है।

जीवन मुक्त हो जाना एक उच्च कोटि की साधना की स्थिति हो जाती है। आदमी साधना करता है, साधना करते-करते विकास हो सकता है। साधु को तो साधना करनी ही चाहिए। गार्हस्थ्य में भी आदमी कैसे आध्यात्मिक साधना को आगे बढ़ाएँ, यह गृहस्थों के लिए भी धातव्य विषय होता है। गृहस्थ जीवन में आदमी ईमानदारी रखे, धोखाधड़ी-छलकपट न हो।

आज आश्विन पूर्णिमा-शारदी-पूर्णिमा है। शरदचंद्र सम श्वेत अर्हत् के लिए कहा गया है। अर्हत् आध्यात्मिक-पथ के नेता और विश्व

विजेता होते हैं। आश्विनी पूर्णिमा का अच्छा समय है। शरद पूर्णिमा का वह चंद्रमा और चाँदनी जिसमें कोई सूक्ष्म अक्षरों को पढ़ने का प्रयास कर सकता है, यह चक्षु-परीक्षण जैसा हो सकता है। आदमी भी चंद्रमा की तरह श्वेत और निर्मल बने। इसके लिए हमें जीवन में सरलता रखने का प्रयास करना चाहिए।

आदमी अहिंसा के पथ पर चले। हिंसा से जितना संभव हो सके विरत रहे। अहिंसा की भावना रखें। आदमी जीवन व्यवहारों में संयम रखें। ये दोनों हैं, तो शरद-चंद्र की सी निर्मलता में आगे बढ़ सकते हैं। साधुत्व के साथ साधना भी बढ़े। यह एक प्रसंग से समझाया कि साधु तो कषायों से मुक्त (मरे हुए) समान हो। हम अपने जीवन में सरलता, अहिंसा,

ईमानदारी, संयम और कषाय को मारने वाले बनें तो हमारा जीवन अपने आपमें कृतपुण्य-धन्य हो सकता है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि साधक इंद्रियों, कषायों और योगों को प्रतिसंस्लीन बनाकर जागरूक जीवन जी सकता है। प्रतिसंस्लीनता का चौथा प्रकार है—विविक्तशैय्या यानी जहाँ न पुरुष, न स्त्री, न नपुंसक रहता है। विविक्तशैय्या में रहने से साधक अपने चारित्र की सुरक्षा कर सकता है। तप का ७वाँ प्रकार प्रायश्चित के बारे में समझाया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अमिता भानावत, आदित्य गोखरू ने गीत से अपनी भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



पारितोषिक व प्रमाण पत्र वितरण समारोह

जयपुर-शहर।

तेममं द्वारा समण संस्कृति संकाय द्वारा आयोजित विभिन्न परीक्षाओं जैन विद्या तत्त्वज्ञान आगम आदि के प्रमाण पत्र व पारितोषिक वितरण का कार्यक्रम अणुविभा केंद्र में शासनश्री साध्वी यशोमती जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने सभी को निरंतर स्वाध्याय व अध्ययन करते रहने की प्रेरणा दी, जिससे जैन धर्म तत्त्वज्ञान दर्शन की जानकारी सभी को होती रहे। करीब 960 बालक-बालिकाओं को पारितोषिक दिया गया।

कार्यक्रम में शहर महिला मंडल की अध्यक्ष निर्मला सुराणा, मंत्री पायल बैद व महिला मंडल सदस्य उपस्थित रहे, सभी को परीक्षा में सफलता के लिए बधाई व शुभकामनाएँ दी।

चित्त समाधि कार्यशाला

विजयनगर-बैंगलोर।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में वरिष्ठ श्रावक और श्राविका के लिए चित्त समाधि कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में वरिष्ठ बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। तत्पश्चात साध्वी आस्थाश्री जी ने समाधि स्थित जीवन जीने के महत्त्वपूर्ण सूत्र बताते हुए ध्यान का प्रयोग करवाया। इस अवसर पर स्थानीय कन्या मंडल की कन्याओं ने एक स्क्रिप्ट के द्वारा प्रस्तुति दी। जिसके आधार पर साध्वीश्रीजी ने सभी वरिष्ठ श्रावक और श्राविकाओं के विचार जाने।

कार्यक्रम में डॉ० स्नेहा मेहता भी

महिला मंडल के विविध आयोजन

उपस्थित थी, इनका परिचय सहमंत्री सुनीता भटेवरा ने दिया। डॉ० स्नेहा ने बैलेंस डाइट की जानकारी दी। जिससे वृद्धावस्था में भी स्वस्थ और सुखी रहा जा सकता है। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने कहा कि वृद्धावस्था आने का द्वार है—इंद्रियाँ। अगर पाँचों इंद्रियाँ अनुशासित रहती हैं, संयम का ब्रेक हाथ में लेकर ही इंद्रियों का उपयोग होता है, तो वृद्धावस्था आती ही नहीं।

साध्वीश्री जी ने कहा कि जेनरेशन गैप तो हमेशा रहता आया है और आगे भी रहेगा, किंतु मन की प्रसन्नता चित्त समाधि को कभी नहीं खोना चाहिए। अनाग्रह की चेतना का विकास करते हुए नकारात्मक विचारों का विसर्जन करना सीखना चाहिए। अंत में कार्यक्रम की संयोजिका ममता मंडोत ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी विज्ञप्रभा जी ने किया।

बेटी चली ससुराल-अणुव्रत का अवदान

सिकंदराबाद, डीवी कॉलोनी।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में महिला मंडल व कन्या मंडल द्वारा एक नाटिका—'बेटी चली ससुराल, अणुव्रत का अवदान' की बहुत सुंदर प्रस्तुति की गई। जिसमें अलग-अलग दृश्यों के माध्यम से उपस्थित जनता को दहेज, भ्रूण हत्या, बड़ों का मान रखना, सह परिवार मिल-जुल के रहना आदि विषयों पर सीख दी गई।

90 दिन की तैयारी में ८ दृश्य की नाटिकाओं का क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण किया गया। साध्वी श्वेतप्रभा जी का इसमें अथक प्रयास एवं विशेष परिश्रम

रहा। महिला मंडल अध्यक्ष अनीता गीडिया ने सभी पधारे हुए अतिथियों का स्वागत किया।

मुख्य अतिथि डॉ० आशा खिवसरा, जैन सेवा संघ के अध्यक्ष अशोक बरमेचा, सभा के अध्यक्ष सुरेश सुराणा, अणुव्रत समिति के मंत्री अशोक मेड़तवाल, टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष राहुल श्यामसुखा ने महिला मंडल को शुभकामनाएँ दी और कार्यक्रम की सराहना की।

महिला मंडल पूर्व अध्यक्ष रीता सुराणा, मंजू दुगड़, कविता आच्छा की गरिमामय उपस्थिति रही। लगभग 300 दर्शक उपस्थित थे। आभार ज्ञापन मंत्री श्वेता सेठिया ने किया। मंच का संचालन सुश्री पायल सुराणा ने किया।

सफलता का स्वर्णिम सूत्र है - पुरुषार्थ बोलाराम।

तेरापंथ भवन में महिला मंडल के तत्वावधान में आयोजित सफलता के स्वर्णिम सूत्र कार्यशाला को संबोधित करते हुए साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि व्यक्ति के जीवन में जितनी गुणवत्ता बढ़ेगी, स्वभाव उत्कृष्ट व आचरण जितना निर्मल बनेगा उतना ही वह अपने अंतःकरण को निर्मल बनाता है। सफल जीवन का स्वप्न लेना तो सहज है, लेकिन नीतिकारों ने कहा है—सफलता के मणि मुक्ता धूल में बिखरे नहीं पड़े हैं, उन्हें पाने की ललक है तो गहराई में उतर जाने का साहस पैदा करो।

साध्वी ज्योतिशशा जी, साध्वी सुरभिप्रभा जी ने मधुर गीत से श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। कार्यशाला में सभा अध्यक्ष रतनलाल सुराणा, तेममं

अध्यक्ष दमयंती सुराणा, चेन्नई से समागत पदम रमेश लुंकड़, जयचंद संचेती, जसवंत बरड़िया, नवीन लुंकड़, पिस्ताबाई लुंकड़, वसंता संचेती आदि

अनेक पारिवारिकजनों ने अपने भुआ महाराज के दर्शन कर प्रसन्नता व्यक्त की। उपासिका सज्जन नाहर ने अपने भाव व्यक्त किए। साध्वी ज्योतिशशा जी ने तनावमुक्ति के लिए कायोत्सर्ग का सुंदर प्रयोग करवाते हुए मंच का संचालन किया।

मासखमण तप अभिनंदन

गांधीनगर।

तेरापंथ भवन में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में मासखमण तप का प्रत्याख्यान प्रभा सेठिया ने किया। साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर ने तप के आगे सम्यक् शब्द को जोड़ा, हमारा तप इहलोक के लिए नहीं, परलोक के लिए नहीं, यश कीर्ति, प्रशंसा, ख्याति, नाम के लिए नहीं परंतु तपस्या सिर्फ और सिर्फ कर्मों की निर्जरा के लिए, कर्मों का कल्मष धोने के लिए, चेतना को चिन्मय बनाने के लिए होनी चाहिए।

इस अवसर पर साध्वी दर्शितप्रभा जी, साध्वी सिद्धांतश्री जी ने गीत की प्रस्तुति दी। महिला मंडल, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका, गांधीनगर ज्ञानशाला, आदित्य, यश सेठिया, रुचिका सेठिया, अभिलाषा डांगी, हेमंत छाजेड़, जितेंद्र घोषल ने विचार व्यक्त किए। असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के संदेश का वाचन एवं स्वागत भाषण अध्यक्ष सुरेश दक ने व अभिनंदन पत्र का वाचन सभा सहमंत्री राजेंद्र बैद ने किया। सभा द्वारा मासखमण तपस्विनी को अभिनंदन पत्र भेंट किया गया। ट्रस्ट उपाध्यक्ष माणक मूथा, सभा मंत्री नवनीत मूथा, सहमंत्री संपत चावत, कोषाध्यक्ष बाबूलाल बाफना, महिला मंडल मंत्री सरस्वती बाफना व अनेक गणमान्य इस अवसर पर उपस्थित रहे। तप का अनुमोदन तप के द्वारा इसमें 85 उपवास, 6 तैले, 29 एकासन की भेंट तपस्विनी बहन प्रभा सेठिया को दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दर्शितप्रभा जी ने किया।

हैप्पी कपल, लाइफ हो सफल कार्यशाला

पूर्वांचल-कोलकाता।

दाम्पत्य जीवन की सफलता के राज साध्वी स्वर्णिखा जी एवं सहवर्तीनी साध्वीवृंद के सान्निध्य में साध्वीश्री जी के मुखारविंद से जीवन में दाम्पत्य को सुखी एवं खुशहाल कैसे रखें, प्रेरणादायी महत्त्वपूर्ण सूत्रों को सुनकर संपूर्ण सदन के मन-मस्तिष्क पर गहरा असर हुआ। कार्यशाला में तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता की ओर से 95 दंपति जोड़ों ने भाग लिया। तेयुप पूर्वांचल के पांच युगल दंपतियों ने एक साथ मिलकर साध्वी स्वर्णिखा जी द्वारा रचित गीतिका का संगान भी किया। संचालन रमन पटावरी एवं प्रमोद पटावरी ने संयुक्त रूप से किया।

तेयुप, पूर्वांचल की ओर से उपाध्यक्ष-प्रथम अमित बैद, मंत्री धीरज मालू, सहमंत्री-प्रथम यश दुगड़, सहमंत्री-द्वितीय राजीव खटेड़, संगठन मंत्री नवीन दुगड़, संस्थापक अध्यक्ष एवं कार्यसमिति सदस्य रतन श्यामसुखा, रवि दुगड़ आदि अनेकजनों ने सहभागिता दर्ज कराई। समाज की प्रमुख संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं अनेक गणमान्य लोग कार्यक्रम में उपस्थित थे।

विघ्न निवारण आत्म जागरण

सूरत।

साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा 'विघ्न निवारण आत्म जागरण' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में साध्वी आराधनाश्री जी ने इस विषय को सरलता से समझाते हुए सभी कन्याओं को आगे बढ़ने को प्रेरित किया और साथ ही अपने चरित्र से भी कैसे ओ बढ़ा जाए वह समझाया। इसके बाद सूरत कन्या मंडल द्वारा डांडिया रास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 50 कन्याओं ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत बहुत सारे गेम्स व डब्बा पार्टी का आयोजन किया गया। तत्पश्चात गरबा प्रतियोगिता खिलाया गया जिसके जज श्वेता सेठिया रहे।

प्रतियोगिता में विजेता रहे—बेस्ट ड्रेस अवार्ड—कोमल बैंगानी, दिव्यांशी सिंघवी, बेस्ट गरबा अवार्ड—यशवी सिंघवी, दिव्या ढेलड़िया, म्यूजिकल चेरर अवार्ड—साक्षी चोपड़ा।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

* अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
* श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
* श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनू-इस्तामपुर	(₹11,00,000)
* श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
* श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अहम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
* श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
* श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
* श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

दीपावली पर विशेष

महावीर निर्वाण दिवस है - दीपावली

□ मुनि कमल कुमार □

भगवान महावीर ने कार्तिक कृष्णा अमावस्या की रात्रि में निर्वाण प्राप्त किया। तब से उस उत्सव को जैन लोग दीपावली पर्व के रूप में निरंतर मनाते आ रहे हैं। जैन धर्म में तीर्थकरों के पाँच कल्याणक माने गए हैं—च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान और निर्वाण। इन पाँचों समय देवता भी उत्सव मनाते हैं। देवताओं ने रत्नों की वर्षा करके उस अमावस्या की अंधेरी रात को पूर्णिमा से ज्यादा जगमगा दिया था। पावापुरी के लोगों ने उस समय घर-घर घी के दीपक जलाए, जिससे अंधेरे से राहत पाई जाए। क्योंकि उस समय बिजली का प्रकाश नहीं था, चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था। भगवान के अंतिम दर्शन करने लोगों का आना प्रारंभ हो गया।

अंधेरे में कोई दुर्घटना न घट जाए इसलिए लोगों ने दीपक जलाकर प्रकाश किया। उस समय राजपथ सड़कों का अभाव था इसलिए प्रकाश के लिए दीपक जलाए गए। क्योंकि मैं दीक्षित हुआ उस समय भी गाँवों में अधिकतर लालटेन, मोमबत्ती का ही प्रकाश देखने में आता था। अब समय बदल गया है। वैज्ञानिक युग में शहरों में ही नहीं गाँवों में भी लालटेन, मोमबत्तियों की जगह बिजली का प्रकाश नजर आता है। इसलिए दीपावली पर्व पर अनर्थ हिंसा से बचने के लिए दीपक-मोमबत्तियों को जलाने की आवश्यकता नहीं है। दीपक जलाने से तैजसकाय, वायुकाय के जीवों की तो हिंसा होती ही है, परंतु दीपक में कई मच्छर भी गिरते हैं, जिससे त्रसकायिक जीवों की हिंसा

भी हो सकती है। हम जैन हैं, हमें हिंसा से अहिंसा के पथ को, असंयम से संयम को अपनाना चाहिए तभी हम अनंत संसारी से परित संसारी बन सकते हैं। दीपावली पर्व पर तेला या उपवास बेला कर जाप, ध्यान, स्वाध्याय, पौषध आदि करके हम अपनी आत्मा का उत्थान कर सकते हैं। पटाखों का प्रचलन भी प्रदूषण और अपव्यय बढ़ाने वाला है जिससे कई बार जनहानि का प्रसंग भी देखने में आता है। हमें अपने विवेक का परिचय देते हुए अहिंसा, संयम, तप बढ़े ऐसा प्रयास करना चाहिए। जिससे भगवान का निर्वाण दिवस दीपावली पर्व पर कर्मों की निर्जरा हो सके और जीवन में उन्नति हो। इससे देव दुर्लभ मनुष्य जन्म सफल हो सकेगा।

प्रेक्षा दिवस कार्यक्रम

अहमदाबाद।

प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्त्वावधान में प्रेक्षा वाहिनी एवं अणुव्रत समिति द्वारा तेरापंथ भवन, शाहीबाग में शासनश्री साध्वी रतनश्री जी एवं शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में प्रेक्षा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सुमधुर गीतिका द्वारा किया गया। शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने बताया कि प्रेक्षा का सीधा अर्थ है—देखना, पहले स्वयं को देखो, परिवार को देखो। जब केवल देखने का अभ्यास हो जाएगा तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा। राग-द्वेष मुक्त होकर सकारात्मक सोच के साथ, सम्यक् द्रष्टाभाव का विकास करें। साध्वी संवेगप्रभा जी, साध्वी हिमश्री जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

वरिष्ठ प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा, लाडदेवी बाफना ने अपने भाव व्यक्त किए। तेरापंथी सभा निवर्तमान अध्यक्ष नरेंद्र सुराणा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुरेश बागरेचा, तेयुप अध्यक्ष ललित वेगवानी, अणुविभा कांसो विमल बोरदिया, अणुव्रत कार्यकर्ताओं के साथ अन्य गणमान्य लोगों के अनेकों श्रावक-श्राविकाओं की सराहनीय उपस्थिति रही।

अंत में वरिष्ठ प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। प्रथम चरण प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्त्वावधान में प्रेक्षावाहिनी, अहमदाबाद में आयोजित किया। दिलीप कोठारी ने प्रेक्षा गीत, आसन, प्राणायाम के प्रयोग करवाए। धर्मेन्द्र कोठारी ने संकल्प सूत्र व आभार विमल घीया ने किया।

सफलता के सूत्र कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

टीपीएफ द्वारा साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में 'सफलता के सूत्र' विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में विचारों की अभिव्यक्ति देते हुए साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या व्यवसाय का अथवा राजनीति का क्षेत्र हो, सफलता प्रत्येक क्षेत्र में वांछनीय होती है। उन्होंने कहा कि सफलता का प्रथम सूत्र है धनीभूत इच्छा, मजबूत संकल्प शक्ति, कष्ट सहिष्णुता, इंद्रिय संयम व मन की चंचलता पर अंकुश रखकर व्यक्ति साफल्यश्री का वरण करता है।

सफलता का दूसरा सूत्र है—समर्पण। जिसके प्रति समर्पण किया जाए उसके प्रति तन, मन और प्राण से पूर्ण समर्पण करने की कोशिश करनी चाहिए। प्रतिकूल परिस्थिति आने पर जो काँच के बर्तन की तरह टूट जाए, वह सच्चा समर्पण नहीं हो सकता।

सफलता का तीसरा सूत्र है—सापेक्ष

सोच। ऐसी सोच रखने वाला दूसरों की प्रकृति को सहन करने में माहिर बन जाता है। उसके घर में स्वर्ग उतर आता है।

चौथे सूत्र की चर्चा करते हुए साध्वीश्री जी ने मधुर भाषा को वशीकरण मंत्र से उपमित किया। प्रमोद भावना से परिपूरित भाषा का प्रयोग असंभव को भी संभव कर दिखला देता है। सफलता के पाँचवें सूत्र से प्रकाश प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ की लो को प्रदीप्त करना होगा। फूल पाने के इच्छुक अगर शूल को देखकर घबरा जाए तो फूल को प्राप्त नहीं कर पाएगा। साध्वीश्री जी ने कई उदाहरणों के द्वारा सबको सरल भाषा में सफलता के सूत्रों को समझाया।

टीपीएफ अध्यक्ष मोहित बैद के कार्यक्रम में किए गए कार्यों की सराहना करते हुए पुनः मनोनीत होने पर मंगलभावना प्रकट की।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण गीत की मधुर स्वर लहरियों के साथ टीपीएफ सदस्यों द्वारा की गई। मंगलाचरण से पूर्व

महामंत्र नवकार का सस्वर पाठ किया। टीपीएफ हैदराबाद के अध्यक्ष मोहित बैद ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने साध्वीश्री जी के प्रति अहोभाव प्रकट करते हुए कार्यशाला के उद्देश्यों की चर्चा की।

टीपीएफ राष्ट्रीय आर्गेनाइजेशन डेवलपमेंट प्रोजेक्ट चेयरमैन नवीन सुराणा ने कार्यशाला विषय पर अपनी भावनाएँ प्रकट की। टीपीएफ राष्ट्रीय नॉलेज बैंक प्रोजेक्ट चेयरमैन दीपक संचेती ने राष्ट्रीय प्रोजेक्ट परामर्श सुविधा आयाम की विस्तृत जानकारी दी।

तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद व बोवेनपल्ली चातुर्मास संयोजक सतीश दुगड़ ने सभी संस्थाओं की ओर से टीपीएफ को शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यशाला अत्यंत उल्लासमय वातावरण में चली। कार्यशाला का संचालन चेतना बोथरा तथा आभार ज्ञापन पुनीत दुगड़ ने किया। कार्यक्रम में टीपीएफ सदस्य व स्थानीय श्रावकों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

अहमदाबाद।

ज्ञानचंद अंकित कुमार सिंधवी (अहमदाबाद) के तेरापंथ नगर में नए मकान का गृह प्रवेश का शुभ मुहूर्त संस्कार अशोक सिंधवी द्वारा संपूर्ण विधि-विधान सहित मंत्रोच्चार के साथ जैन संस्कार विधि से किया गया।

इस अवसर पर अध्यक्ष संदीप चोरड़िया, उपाध्यक्ष संतोष सिंधवी, संगठन मंत्री कमलेश सिरोहिया, सहमंत्री राजू कर्णावट, जैन संस्कार प्रभारी सुनील बाबेल, राकेश नंगावत आदि ने व्यापक प्रचार-प्रसार की कार्य-योजना रखी। परिवार की ओर से पधारे हुए सभी अतिथियों का आभार प्रदर्शन सज्जनलाल सिंधवी द्वारा किया गया।

नामकरण संस्कार

सूरत।

श्रीडूंगरगढ़ निवासी, सूरत प्रवासी रतनलाल मालू के सुपुत्र रजत-रमा मालू के प्रांगण में कन्या का जन्म हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश डाकलिया व धर्मचंद सामसुखा ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। संस्कारक श्री की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किया गया।

रतनलाल ने उपस्थित पारिवारिकजन का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत से प्रकाश घोड़ावत व विजय सुराणा ने मालू परिवार का आभार ज्ञापन किया और मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नवीन प्रतिष्ठान शुभारंभ

अहमदाबाद।

अशोक कुमार नवीन कुमार बागरेचा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से करवाया गया। संस्कारक आनंद बोथरा, विजय छाजेड़, दिनेश बागरेचा ने समवेत मांगलिक मंत्रोच्चार विधि को संपादित किया। तेयुप कोषाध्यक्ष दिलीप भंसाली ने कार्यक्रम के संचालन के साथ बागरेचा परिवार को बधाई प्रेषित की।

परिषद की ओर से स्मृति चिह्न के रूप में मंगलभावना पत्रक की भेंट दी गई। कार्यक्रम में सहमंत्री गौतम बरड़िया की उपस्थिति रही, बागरेचा परिवार से नवीन कुमार ने संस्कारकों एवं परिषद के प्रति आभार ज्ञापित किया।

नामकरण संस्कार

सूरत।

उदासर निवासी, सूरत प्रवासी गोपीचंद महनोत के सुपुत्र जयंत-चेरी मेहनोत के प्रांगण में कन्या का जन्म हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, सुशील गुलगुलिया, मीठालाल भोगर ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। संस्कारक श्री की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किया गया।

तेयुप, सूरत से अमित सेखानी व अमित चोपड़ा, निशांत बैद ने महनोत परिवार का आभार ज्ञापन किया और मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

थायराइड प्रोफाइल कैंप

मैसूर।

तेरापंथ महिला मंडल ने तेयुप के अंतर्गत आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में 'थायराइड प्रोफाइल कैंप' का आयोजन किया। कैंप का शुभारंभ साध्वीश्री जी के मंगलपाठ से हुआ। इस कैंप में ८० सदस्यों ने अपना चेकअप कराया। कैंप के प्रायोजक थे शंकरलाल, सुरेशचंद्र, राजमल गुगलिया (मोखुंद), मैसूर। इस कैंप में सभी भाई-बहनों ने अपनी सहभागिता दी। साध्वीश्री जी ने भी अपना चेकअप करवाया।

कैंप में तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजु दक, मंत्री वनिता बाफना, प्रचार-प्रसार मंत्री मीनाक्षी कोठारी, ललिता पितलिया, सीमा देरासरिया उपस्थित थे। तेयुप से एटीडीसी के प्रभारी मुकेश गुगलिया, सहप्रभारी सेजल कोठारी कार्यकर्ता, सुनिल देरासरिया, विनोद मारू, विकास देरासरिया, प्रदीप चौहान उपस्थित थे।



आत्मा के आसपास

□ आचार्य तुलसी □

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा



परिवर्तन की प्रक्रिया

प्रश्न : ध्यान भीतरी रूपांतरण की अमोघ प्रक्रिया है, यह बात सही है। पर समस्याओं से घिरा हुआ व्यक्ति ध्यान के लिए अपने मानस को तैयार कैसे कर सकता है? वैसी मानसिकता निर्मित होने पर भी वर्षों से पनपी हुई आदतें कैसे बदल सकती हैं?

उत्तर : कुछ आदतों के मूल में तनाव काम करता है। जीवन में निरंतर की समस्याओं से आक्रांत व्यक्ति तनाव का शिकार हो जाता है। उस तनाव को कम करने के लिए वह मादक द्रव्यों का सेवन करता है। उससे बाहर का तनाव तो एक बार क्षीण होता हुआ प्रतीत होता है, किंतु भीतरी तनाव अधिक हो जाता है। उस तनाव को न तो मादक पदार्थ दूर कर सकते हैं और न औषधियाँ। अनेक स्थलों पर वैज्ञानिक परीक्षणों से प्रमाणित हो चुका है कि औषधियों द्वारा जो उत्तेजना कम नहीं हुई, तनाव समाप्त नहीं हुआ, वह ध्यान के द्वारा नामशेष हो गया। हमारे शिविर-कालीन अनुभव भी यही बताते हैं कि ध्यान में व्यक्ति बहुत बदल जाता है। बहुत अधिक नशा करने वाले, अकारण उत्तेजित रहने वाले लोग भी ध्यान शिविर में साधना करने के बाद काफी बदले हुए पाए गए।

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि आदमी जितना अधिक तनाव में रहता है, उतना ही आग्रही होता है। आग्रह की स्थिति में उसे अपनी भूल का अनुभव नहीं होता। ध्यान की मानसिकता अनाग्रह की स्थिति में निमित्त हो सकती है। ध्यान अपने आपमें विनम्रता का एक प्रयोग है, अनाग्रह का प्रयोग है। ध्यानकाल में अहं टूटता है, आग्रह छूटता है, विनम्रता बढ़ती है और अनाग्रह विकसित होता है। इसका कारण स्पष्ट है—ध्यान करने वाला सत्य का साक्षात्कार करने की दिशा में आगे बढ़ता है। जहाँ सत्य साक्षात् हो जाता है, वहाँ किसी भी बात का आग्रह ही नहीं सकता। आग्रह जितना भी होता है, परोक्षज्ञानी में ही होता है। प्रत्यक्षज्ञानी सत्य के प्रति समर्पित होता है, सत्य उसे प्राप्त हो जाता है। ऐसी स्थिति में आग्रह को टिकने का स्थान ही नहीं मिलता। अनाग्रही व्यक्ति में परिवर्तन करना नहीं पड़ता, स्वयं घटित होता है। ध्यान के द्वारा तनाव का ताना-बाना छिन्न-भिन्न होता है। उसके बाद दृष्टि स्पष्ट होती है। उससे आग्रह समाप्त होता है और अनाग्रही चित्त किसी भी गलत आदत से सहजता से मुक्त हो सकता है।

भगवान महावीर ने जिस अनेकांत या स्याद्वाद के सिद्धांत का प्रतिपादन किया, वह उनके ध्यान की ही फलश्रुति थी। जो साधक ध्यान में नहीं जाता, वह अनेकांत का प्रयोग कैसे कर सकता है? ध्यान के क्षणों में अनेकांत जैसा अनाग्रही दर्शन आविर्भाव पा सकता है।

अब प्रश्न यह रहा कि समस्याओं से घिरा हुआ व्यक्ति ध्यान में जा कैसे सकता है? कुछ कठिनाता तो इनमें है ही पर दृष्टिकोण की स्पष्टता और संकल्प की दृढ़ता के सामने कोई भी कठिनाई टिक नहीं सकती। जब व्यक्ति का दृष्टिकोण इतना स्पष्ट हो जाता है कि ध्यान के द्वारा हर आदत बदल सकती है तो इस धारणा के साथ ही वह ध्यान के प्रयोग करने के लिए संकल्पबद्ध हो जाता है। संकल्प बल से किसी भी व्यक्ति का मानस किसी भी दिशा में मोड़ा जा सकता है।

प्रश्न : क्या संकल्प मात्र से किसी भी व्यक्ति में स्वभाव-परिवर्तन की संभावना सत्य रूप में परिणत हो सकती है।

उत्तर : ध्यान के द्वारा परिवर्तन तभी संभव है जब ध्यान में जाने के लिए गहरी आस्था हो। आस्था का निर्माण हुए बिना ध्यान में जाने की क्षमता अर्जित नहीं हो सकती। कुछ व्यक्तियों में नैसर्गिक आस्था होती है और कुछ व्यक्तियों की आस्था का निर्माण करना पड़ता है। आस्था पर संकल्प की पुट लग जाए और अनवरत अभ्यास का क्रम चलता रहे तो आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। अभ्यास ऐसा तत्त्व है जो साधना की शृंखला को बराबर जोड़े रखता है। अभ्यास की धारा टूटने से सफलता संदिग्ध हो जाती है। आस्था, संकल्प और अभ्यास—इन तीन तत्त्वों के अधिगत हो जाने के बाद साधक में आत्मानुशासन का विकास हो जाता है। यह अनुशासन आरोपित नहीं होता, सहज स्वीकृत होता है। इस अनुशासन में संयम के विकास की अनिवार्यता है। संयम से हमारा प्रयोजन है—तन्मयता से। यह तन्मयता ही भावक्रिया है। केवल त्याग-प्रत्याख्यान से संयम नहीं सध सकता। त्याग-प्रत्याख्यान भी साधना का एक प्रकार है, किंतु उसमें पूर्णता नहीं है। साधना में पूर्णता लाने के लिए संयम के साथ भावक्रिया का होना नितांत अपेक्षित है।

पूर्ण संयम का विकास तब हो सकता है, जब पदार्थ-प्रयोग से मन विरत हो। अथवा इस तथ्य को इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि संयम के प्रति रति होने से पदार्थ-भोग के प्रति अरति हो सकती है। 'अनुरागाद् विरागः' अनुराग से विराग का होना एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है। बच्चे के हाथ से किसी वस्तु को छुड़ाने के लिए उसे अधिक आकर्षक खिलौने या किसी दूसरी वस्तु के प्रति आकृष्ट करना होता है। अन्यथा वह उसे छोड़ नहीं सकता। पदार्थ विरति भी उसी क्षण घटित हो सकती है, जिस क्षण आत्मा या चैतन्य के साथ उसका संबंध स्थापित हो जाता है। यह स्थिति पतंजलि के शब्दों में धारणा के रूप में निरूपित की गई है। धारणा की धाराप्रवाह प्रतीति ध्यान है और ध्यान में पूर्ण तन्मयता का नाम समाधि है। संयम की पूर्णता के लिए धारणा, ध्यान और समाधि तीनों ही आवश्यक हैं। ध्यान साधना के अनुशासन की पूरी प्रक्रिया शिविर-साधना को आगे बढ़ाती है। साधक की शारीरिक और मानसिक स्थिति में संयम या साधना के अनुशासन की पूर्ण स्वीकृति ही शिविर-साधना का ठोस आधार है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

□ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा □

(२७)

जब-जब होकर तन्मय मैंने तुम्हें निहारा।
अनायास ही बजता साँसों का इकतारा।।

चरण टिकाए ज्यों ही इस धरती पर तुमने
हुई अंकुरित पाकर पावन परस तुम्हारा
अधर खोल जब तुमने पहला गीत सुनाया
बासंती उपवन में बदला पतझर सारा
निरुपम आभा देख तुम्हारी गगन मुदित है
उदित हो गया देखो कोई दिव्य सितारा
मानव-मन के सपनों की जो फसल खड़ी है
उसे मिल गया आज अचानक ही रखवारा
छलक रही है नयनों से कैसी रसधारा।।

अनाघ्रात फूलों की सौरभ से सुरक्षित तुम
अनबींधे मोती-से अनुपम आकर्षण हो
नए अनछुए किसलय हो जीवन की लय हो
अपना रूप देख पाऊँ ऐसे दर्पण हो
अब तक भी पी सका न जिसको भंवरा कोई
इतने पावन पारिजात हो मनभावन हो
हर उलझन के समाधान हो चिर नवीन हो
निर्बन्धित वातायन से आगत पुलकन हो
हो जाते सब रोमांचित पा मौन इशारा।।

कीर्ति कौमुदी देख तुम्हारी नभ-धरती पर
मन के अगम सिंधु में मचल रही हैं लहरें
बियाबान जीवन में भर मधुरिम कोलाहल
पैठ रहे तुम लोक चेतना में अति गहरे
देव! अमित वात्सल्य तुम्हारा खुद बतलाता
पलकों की छाया में कितनी करुणा पलती
पल-पल सफल प्रेरणा पाई आज वही तो
अंधेरी राहों में दीपशिखा बन जलती
नहीं दूसरा तुम-सा कोई सिरजनहारा।।

(२८)

आज समय के सागर में यह कैसी हलचल।
मौसम बना सुहाना घुली पवन में परिमल।।

खिली भोर सूरज से पहले नभ मुसकाया
बिछा नया आलोक मिटाकर तम का साया
खड़ी फसल खेतों में पल-पल लहराती है
साँसों ने आस्था का अनुपम गीत सुनाया
नए सृजन की सौगातें उनको मिलती हैं
रहते जो विपरीत परिस्थितियों में अविचल।।

धूप सुनहरी वृक्षों पर चढ़ झाँक रही है
मनुज लोक की खुशहाली को आँक रही है
महक उठे जलजात पात सब मानस-सर के
रात सितारे निज चुनरी में टाँक रही है
वल्य ज्योति का समा रहा मेरी पलकों में
मुदित कामना की निर्झरिणी बहती कल-कल।।

हर विकास के साथ सहज तूफ़ाँ आते हैं
अधरों पर अंगारे फिर भी मुसकाते हैं
भावी के सुंदर सपनों में खोए रहते
महापुरुष वे मन की उलझन सुलझाते हैं
शब्दों का परिधान उन्हें कैसे पहनाएँ
खंडित करें चेतना को क्यों जो है अविचल।।

स्वर्ग बना दे धरती को वह कला सिखाते
हर मानव की पीड़ा शंकर बन पी जाते
पाहन स्वयं पिघल जाता है करुणा पाकर
पतितों के पावन! प्राणों को सुधा पिलाते
आज उजाले का करना अभिषेक तेज से
बन जाए अभिराम राम! जीवन का पल-पल।।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

आज्ञावाट

भगवान् प्राह

(१३) रागद्वेषविनिर्मुक्त्यै, विहिता देशना जिनैः।
अहिंसा स्यात्तयोर्मोक्षो, हिंसा तत्र प्रवर्तनम्॥

वीतराग ने राग और द्वेष से विमुक्त होने के लिए उपदेश दिया। राग और द्वेष से मुक्त होना अहिंसा है और उनमें प्रवृत्ति करना हिंसा है।

जहाँ राग-द्वेष विद्यमान हैं, वहाँ अहिंसा नहीं हो सकती। जो क्रियाएँ राग-द्वेष से प्रेरित हैं, वे अहिंसक नहीं हो सकतीं। जो क्रियाएँ इनसे मुक्त हैं, वे अहिंसा की परिधि में आ सकती हैं। सामान्य गृहस्थ के लिए राग-द्वेष से संपूर्ण मुक्त हो पाना संभव नहीं है, फिर भी वह अपने सामर्थ्य के अनुसार इनसे दूर रहता है, वह उसका अहिंसक भाव है। वीतराग व्यक्ति की प्रत्येक प्रवृत्ति अहिंसा की पोषक होती है और अवीतराग व्यक्ति की प्रवृत्ति में राग-द्वेष का मिश्रण रहता है। इसे स्थूल बुद्धि से समझ पाना कठिन है, किंतु सूक्ष्मदृष्टि से देखने पर कहीं एक कोने में छिपे हुए राग-द्वेष देखे जा सकते हैं।

भगवान् का सारा प्रवचन राग-द्वेष की मुक्ति के लिए होता है। राग-द्वेष की मुक्ति हो जाने पर सारे दोष धुल जाते हैं। सब दोषों के ये दो उत्पादक तत्त्व हैं। सारे दोष इन्हीं की संतान हैं।

(१४) आरम्भाच्च विरोधाच्च, संकल्पाज्जायते खलु।
तेन हिंसा त्रिधा प्रोक्ता, तत्त्वदर्शनकोविदैः॥

हिंसा करने के तीन हेतु हैं—आरंभ, विरोध और संकल्प। अतः तत्त्वाज्ञानी पंडितों ने हिंसा के तीन भेद बतलाए हैं—

- आरंभजा हिंसा—जीवनयावन हेतुक हिंसा।
- विरोधजा हिंसा—प्रतिरक्षात्मक हिंसा।
- संकल्पजा हिंसा—आक्रामक हिंसा।

भगवान् महावीर ने आत्मा का विकास अहिंसा के मूल में देखा। उनका समस्त कार्य-कलाप अहिंसा की परिक्रमा किए चलता था। इसलिए उनका उपदेश अहिंसापरक था। अहिंसा की आवाज एक छोर से दूसरे छोर तक व्याप्त हो गई। वह सबके लिए थी। उन्होंने अपने शिष्यों से कहा—‘जो धर्म में उठे हैं और जो नहीं उठे हैं उन सबको इस धर्म का उपदेश दो।’ फलस्वरूप सहस्रों व्यक्ति पूर्ण अहिंसक (मुनि) बने।

गृहस्थ-जीवन में हिंसा से कैसे बचा जा सकता है, इस प्रश्न के समाधान में भगवान् महावीर ने हिंसा के तीन भेद किए, जिनके स्वरूप का विवेचन अगले श्लोकों में स्पष्ट किया गया है। भगवान् ने तीन प्रकार की हिंसा का निरूपण करते हुए गृहस्थ को निरर्थक हिंसा और संकल्पजा हिंसा से दूर रहने की बात कही है, जो अत्यंत व्यवहार्य और सुखी जीवन की प्रेरणा देने वाली हैं।

(१५) कृषी रक्षा च वाणिज्यं, शिल्पं यद् यच्च वृत्तये।
प्रोक्ता साऽऽरम्भजा हिंसा, दुर्वार्या गृहमेधिना॥

कृषि, रक्षा, व्यापार, शिल्प और आजीविका के लिए जो हिंसा की जाती है, उसे आरंभजा-हिंसा कहा जाता है। इस हिंसा से गृहस्थ बच नहीं पाता।

गृहस्थ अपने और अपने आश्रित व्यक्तियों के भरण-पोषण के लिए आजीविका करता है। वह कर्म से सर्वथा मुक्त नहीं हो सकता। जहाँ कर्म है वहाँ हिंसा है। कर्म ही आरंभ है। कर्म की दो धाराएँ हैं—गर्ह और अगर्ह।

मांस, शराब, अंडे आदि का व्यापार गर्ह-निंद्य माना गया है। एक आत्म-द्रष्टा या धार्मिक वह नहीं कर सकता। खेती, रक्षा, शिल्प आदि वृत्तियाँ गर्ह नहीं हैं। गृहस्थ इनका अवलंबन लेता है।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरुमल ‘लाडनू’ □

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-२८: सम्यक्त्व को स्थिर कैसे रखा जा सकता है?

उत्तर : सम्यक्त्व को स्थिर रखने के लिए छह उपाय बताए गए हैं—

- | | |
|-------------------------------|--------------------------------------|
| (१) आत्मा है। | (२) आत्मा नित्य है। |
| (३) आत्मा कर्म का कर्ता है। | (४) आत्मा कर्म का भोक्ता है। |
| (५) आत्मा कर्म-मुक्त होता है। | (६) आत्मा के मुक्त होने के साधन हैं। |

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण □

आचार्य पादलिप्त



आर्य पादलिप्त के संबंध में पूरी जानकारी प्राप्त कर शातवाहन नरेश ने मानखेट के भूपति कृष्ण के पास आर्य पादलिप्त को अपने यहाँ भेजने का निमंत्रण भेजा। नरेश शातवाहन की प्रार्थना पर गंभीरता पूर्वक विचार कर आर्य पादलिप्त ने पृथ्वी-प्रतिष्ठानपुर की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती दूरी को अतिशीघ्रता से पारकर वे प्रतिष्ठानपुर के बाहर उद्यान में आकर रुके। आर्य पादलिप्त के आगमन की चर्चा वहाँ के दानवीर शासक शातवाहन की विद्वान्-मंडली में चली। पंडितों ने शरत्कालीन संघन (जमा हुआ) घृत से भरा कटोरा एक व्यक्ति के साथ उनके सम्मुख भेजा। आचार्य पादलिप्त तीक्ष्ण प्रतिभा के धनी थे। वे विद्वानों की भावना को भाँप गए। उन्होंने घृत में सुई डालकर कटोरे को लौटा दिया। विद्वानों का अभिप्राय था—

शातवाहन की नगरी घृत से भरे कटोरे की भाँति विद्वानों से भरी है। इस बात का नगरी में प्रवेश करने से पहले भली-भाँति चिंतन कर लें।

आचार्य पादलिप्त का उत्तर था—

‘घृत से भरे कटोरे में जैसे सुई समा गई है, वैसे ही विद्वानों से मंडित शासक शातवाहन की नगरी में मैं प्रवेश पा सकूँगा।’ आचार्य पादलिप्त की विद्वत्ता का शातवाहन की विद्वन्मंडली पर अत्यधिक प्रभाव हुआ।

नगर-प्रवेश के समय विद्वद्वर्ग सहित शातवाहन नरेश ने आर्य पादलिप्त का स्वागत किया एवं प्रवेश-महोत्सव मनाया।

एक बार आर्य पादलिप्त ने ‘तरंगलोला’ (तरंगवती) नामक एक चम्पू काव्य की रचना कर राजा शातवाहन की विद्वद्सभा में उसका व्याख्यान किया। काव्य सुनकर राजा तुष्ट हुआ। कवीन्द्र के नाम से आर्य पादलिप्त की ख्याति हुई। कवियों ने भी मुक्तकंठ से प्रशंसा की। राजसम्मनित गुणज्ञा गणिका ने उनकी स्तवना में एक शब्द भी न कहा। राजा शातवाहन पादलिप्त से बोले—आर्य ऐसा उपक्रम करें जिससे यह गणिका भी आपके इस काव्य की स्तुति में हमारे साथ हो। प्रभावक चरित्र के अनुसार गणिका के स्थान पर पांचाल कवि का उल्लेख है। आचार्य पादलिप्त के काव्यश्रवण से सब संतुष्ट थे, पर असूयाक्रांत पांचाल कवि प्रसन्न नहीं था। वह इस उत्तम काव्य में भी दोषों को आरोपित करता हुआ बोला—

मेरे ही ग्रंथों से अर्थ-चोरी कर कथा क्या कंथा (गुदड़ी) रची है। ऐसे प्राकृत के साधारण वचन बालगोपाल को ही प्रभावित करने में समर्थ हैं। इससे विद्वानों का चित्त आकृष्ट नहीं हो सकता। ऐसी कथाओं की स्तवना करना भोगवती गणिका के लिए ही शोभा देता है।

आचार्य पादलिप्त कवि ही नहीं थे, चामत्कारिक विद्याओं पर भी उनका प्रभाव था। वे उपाश्रय में गए एवं पवनजय मंत्र-विद्या के सामर्थ्य से श्वास की गति का अवरोध कर पूर्ण निश्चेष्ट हो गए। उनकी कपटपूर्ण मृत्यु भी यथार्थ मृत्यु की प्रतीति करा रही थी। सर्वत्र हाहाकार फूट पड़ा। वाद्यों की ध्वनि के साथ शवयान नगर के प्रमुख मार्गों से ले जाया जा रहा था। आर्य पादलिप्त को शवयान में देखते ही शोकपूरित कवि पांचाल रो पड़ा और बोला—

आकर: सर्वशास्त्राणां रत्नानामिव सागरः।

गुणैर्न परितुष्यामो यस्य मत्सरिणो वयम्॥

रत्नाकर की भाँति समग्र शास्त्रों के आकर, महासिद्धि पात्र आचार्य पादलिप्त थे। ईर्ष्यावश में उनके गुणों से भी परितुष्ट नहीं हुआ। मेरे जैसे असूयी व्यक्ति को कभी मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी। आचार्य पादलिप्त उच्च कोटि के कवि थे।

सीसं कहवि न फुट्टं जमस्स पालित्तयं हरंतस्स।

जस्स मुहनिज्जराओ तरंगलोला नई वूढा।।

जिनके मुख निर्झर से ‘तरंगलोला’ नदी प्रभावित हुई, उन पादलिप्त के प्राणों का हरण करने वाले यमराज का सिर फूटकर दो टूक क्यों न हो गया?

कवि पांचाल के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर आचार्य पादलिप्त उठ बैठे और बोले—‘मैं कविजी के सत्य वचन के प्रयोग से जीवित हो गया हूँ।’ आचार्य पादलिप्त में प्राणशक्ति का संचार देखकर सभी के मुख कमल-दल की भाँति मुस्करा उठे।

(क्रमशः)



अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह कार्यक्रम

खेडब्रह्मा।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी एवं साध्वी ध्यानप्रभा जी, साध्वी श्रुतप्रभा जी, साध्वी यशस्वीप्रभा जी के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का सप्त दिवसीय कार्यक्रम चला।

सांप्रदायिक सौहार्द दिवस पर मुख्य वक्ता साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किए।

जीवन विज्ञान विषय पर मुख्य वक्ता निवर्तमान प्रिंसिपल हरिहर पाठक ने अपने विचार रखे। जीवन विज्ञान की आज के युग में अत्यंत आवश्यकता बताई। साध्वी श्रुतप्रभा जी ने जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान को विस्तार से बताया और कहा यह गणाधिपति गुरुदेव तुलसी एवं महाप्रज्ञ की मानव जाति को बहुत बड़ी देन रही है।

मंगलाचरण के बाद साध्वी ध्यानप्रभा जी ने विस्तार से अणुव्रत क्या है? क्यों है? और किसके लिए है? इस पर विस्तार से जानकारी दी। आजादी मिलने के बाद भौतिक विकास की योजनाएँ बनाई जा रही थी उस समय राष्ट्रसंत आचार्यश्री तुलसी ने मानवता के विकास के लिए बिन सांप्रदायिक धर्म जो अणुव्रत के नाम से एक आंदोलन के रूप में चलाया गया। जिसका प्रभाव न केवल भारत में ही हुआ, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हुआ।

शासनश्री साध्वीश्री जी ने कहा कि इसे हर संप्रदाय, जाति व रंग के भेदभाव बिना या अपनाया जा सकता है। छोटे-छोटे नियमों द्वारा व्यक्ति सुधार संभव है और व्यक्ति सुधार के साथ-साथ परिवार, राज्य, समाज एवं राष्ट्र का विकास भी संभव है।

पर्यावरण दिवस पर मुख्य वक्ता सुरेश भाई पटेल, प्रधानाध्यापक ज्योति हाईस्कूल, खेडब्रह्मा ने ध्यान को बहुत महत्वपूर्ण बताया। बाह्य ध्यान हर व्यक्ति कर रहा है। हर कार्य में ध्यान हो रहा है। बिना ध्यान के जीवन चल नहीं सकता पर यह सब बाह्य ध्यान है। यहाँ जो विषय रखा है वह स्वयं का ध्यान भीतर का ध्यान जिससे विभाव से स्वभाव में रहा जा सके। पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए ध्यान की आवश्यकता रहती है। अशुद्ध पर्यावरण जीवन के लिए उपयुक्त नहीं है। हमें पर्यावरण को शुद्ध रखने का मानस बनाना चाहिए।

साध्वी ध्यानप्रभा जी ने पर्यावरण शुद्धि को अध्यात्म के साथ जोड़ने की बात बताई, जिससे अनेक प्रकार के कर्म बंधनों से बचा जा सकता है। शासनश्री सत्यप्रभा जी ने कहा कि आज जितना भूमि का दोहन हो रहा है, वृक्षों का नाश किया जा रहा है। क्या यह मानव जाति के लिए खतरा नहीं है। इस पर हमें गहराई से सोचना होगा।

नशामुक्ति दिवस पर मुख्य वक्ता ब्रह्मभट्ट, प्रोफेसर आर्ट्स एंड कॉमर्स खेडब्रह्मा ने कहा महाभारत के समय राजा-महाराजाओं द्वारा नशा किया जाता था। जिससे कितना नुकसान हुआ, विस्तार से बताया। आज हर घर में नशे का प्रचलन बनता जा रहा है। हमें नशा नहीं करना चाहिए। तनाव से निजात पाने में नशा करना कोई ठोस उपाय नहीं है।

साध्वी श्रुतप्रभा जी ने कहा—नशा नाश का द्वार है, फिर आज लोग इसे नहीं समझ रहे हैं, यह दुर्भाग्य है। नशे के अनेक प्रकार हो सकते हैं। हमें अच्छाइयों का नशा रखना चाहिए न की बुराईयों का। ज्ञानशाला के विद्यार्थियों ने कव्वाली प्रस्तुत की। साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि गलत नशे की आदत वालों ने अपने पूरे परिवार को दुखी बनाया है।

अनुशासन दिवस पर साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने शासन व अनुशासन पर विस्तार से बताया। जो व्यक्ति स्वयं पर शासन कर सकता है, वही व्यक्ति दूसरों पर अनुशासन कर सकता है।

शासनश्री सत्यप्रभा जी ने कहा कि हर व्यक्ति को अनुशासन में रहना चाहिए। तेरापंथ धर्मसंघ को देखिए एक ही आचार्य के नेतृत्व में सैकड़ों साधु-साधवियाँ एवं करोड़ों श्रावक-श्राविकाएँ जी रहे हैं। अनुशासन जीवन निर्माण में बहुत ही उपयोगी है। सभी कार्यक्रमों का संचालन स्थानीय सभा के अध्यक्ष शंकर जैन ने किया।

अहिंसा दिवस पर मुख्य वक्ता गौतम भाई भट्ट प्रिंसिपल शारदा विद्या मंदिर बडाली से पधारे, उन्होंने अहिंसा पर प्रभावशाली विचार रखे। अहिंसा धर्म है, अहिंसा वही व्यक्ति पाल सकता है, जिसमें दया, करुणा व मैत्री भाव हो। अणुव्रत सप्ताह का समापन शासनश्री साध्वीश्री जी के प्रेरक उद्बोधन के साथ हुआ।

वृहद श्रावक सम्मेलन 'उन्नयन' कार्यक्रम

चेन्नई।

तेरापंथी सभा के तत्वावधान में साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में पेरियार थिडल के हॉल में चेन्नई एवं चेन्नई क्षेत्रीय वृहद श्रावक सम्मेलन 'उन्नयन' का आयोजन किया गया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि तेरापंथ सभा के तत्वावधान में श्रावक सम्मेलन का कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। अध्यात्म की दिशा में ऊर्ध्वारोहण की विशिष्ट शक्ति का संवाहक है—श्रावक। आस्था, समर्पण और संघनिष्ठा का बेजोड़ नमूना है—श्रावक। विवेक की मशाल को हाथ में थामे जीवन की हर दिशा को प्रकाश से प्रकाशित करने वाली चेतना का नाम है—श्रावक।

साध्वीश्री जी से प्रेरित होकर सैकड़ों श्राविकाओं ने प्री-वेडिंग, पूल-पार्टी में संभागी न बनने का संकल्प लिया। संघभक्ति, गुरुभक्ति को प्रगाढ़ बनाने वाले ओजस्वी एवं मार्मिक प्रवचन को सुनकर सब रोमांचित हो गए। साध्वीश्री जी ने कहा कि सभा द्वारा अच्छा एवं निष्पत्तिजनक कार्यक्रम आयोजित हुआ। अध्यक्ष प्यारेलाल, मंत्री गजेंद्र खाटेड़, संयोजक विमल चिप्पड़, सह-संयोजक राजेंद्र भंडारी एवं पूरी टीम ने अच्छा श्रम किया है।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा जैसे बीज बोएँगे, वैसे ही फसल होगी। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा कि गणशक्ति व गुरुभक्ति शिखरों का स्पर्श तब करेगी जब समर्पण का दीप जलेगा। संघ में समर्पण

बेजोड़ है। साध्वी समत्वयशा जी ने सुंदर गीत का संगान किया। साध्वी सुधाप्रभा जी ने मंच संचालन किया।

तेरापंथी महासभा अध्यक्ष सुरेश गोयल ने कहा कि संघ का गौरव हमारा गौरव है। संघ का सम्मान-हमारा सम्मान है। संघ की प्रतिष्ठा हमारी प्रतिष्ठा है। हमें संघ के गौरव, सम्मान व प्रतिष्ठा को बढ़ाना है। अध्यक्ष ने दूसरे सत्र 'मन की बात महासभा के साथ' में महासभा द्वारा संचालित गतिविधियों की जानकारी दी। महामंत्री रमेश सुतरिया ने सफल आयोजन के लिए बधाई दी। मुख्य वक्ता पन्नालाल पुगलिया ने कहा कि फूल जब डाली से लगा रहता है, तब तक ही शोभा पाता है। महासभा के सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा, ज्ञानचंद आंचलिया, देवराज आच्छा ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन विमल चिप्पड़ ने किया। आनंद समदरिया ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। सभा के अंतर्गत जय तुलसी संगीत मंडल व सभा के सदस्यों ने संगान किया। टीपीएफ के सदस्यों ने आचार्य महाश्रमण महिमा लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। महिला मंडल, ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं, अणुव्रत समिति, टीपीएफ ने विभिन्न सत्रों में अलग-अलग मंगल संगान किया।

कन्या मंडल ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। मंत्री गजेंद्र खाटेड़ ने प्रथम व मुख्य सत्र का प्रारंभिक संचालन किया। विमल चिप्पड़ ने दूसरे सत्र को संचालित किया। राजेंद्र भंडारी व दिलीप मुणोत ने विचार रखे। आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष अनिल सेठिया ने किया।

एकाह्निक तुलसी-शतकम्

मुनि सिद्धकुमार

(क्रमशः)

- (१४) भुव्यवतरितुं शक्यं, कदाचित्तरमण्डलम्।
भवद्सर्वगुणानां तु, ह्युल्लेखनमसंभवम्॥
कदाचित् तारे जमीन पर उतर सकते हैं, परंतु आपके सभी गुणों का वर्णन असंभव है।
- (१५) चुलुकमात्रयावेष्टुं, शक्योऽस्ति किन्तु सागरः।
भवद्सर्वगुणानां च, ह्युल्लेखनमसंभवम्॥
हो सकता है कभी चुलू में सागर समा जाए, परंतु आपके सभी गुणों का वर्णन असंभव है।
- (१६) विषं भुक्त्वाऽमरत्वस्य, संप्राप्तिरिति संभवा।
भवद्सर्वगुणानां तु, ह्युल्लेखनमसंभवम्॥
कदाचित् विष के भोग से अमरत्व की प्राप्ति संभव है, परंतु आपके सर्व गुणों का वर्णन असंभव है।
- (१७) मम शब्दाः ससीमाश्च, भवद्गुणा असीमकाः।
अतो भवद्गुणानां तु, ह्युल्लेखनमसंभवम्॥
मेरे शब्द असीम हैं तथा आपके गुण असीम अतः सभी गुणों का वर्णन असंभव है।
- (१८) अहं तथापि वन्दिष्ये, ज्ञात्वाऽसीमगुणान् तव।
विद्वद्भिः कथितं यच्च, मूर्खो मूर्ख्यं करिष्यति॥
यह जानते हुए भी कि आपके गुणों का वर्णन समीचीन रूप से नहीं किया जा सकता, मैं आपकी स्तुति करूँगा, क्योंकि विद्वानों ने कहा है, कि मूर्ख तो मूर्खता ही करेगा।
- (१९-२०) 'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य, त्रायते महतो भयात्'।
एतच्छि सूत्रप्राचीनं, पठित्वा चिन्तितं मया॥
समर्पितं च धर्माय, यस्य सम्पूर्णं जीवनम्।
शोको नास्ति भयं नास्ति, तस्य सम्पूर्णजीवने॥
(युग्मम्)
स्वल्प धर्माचरण भी व्यक्ति को महान् विपत्ति से बच लेता है—यह प्राचीन सूत्र का पठन कर मैंने चिंतन किया कि जिसने धर्म के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया, उसके जीवन में तो भय और शोक का अस्तित्व ही नहीं।
- शरीर-वर्णन
- (२१) तवालौकिकयोरक्षण, आसीदवस्थितिः शनेः।
प्रकर्तुं केन शक्नोमि, तुलनामतुलस्य च॥
प्रभो! आपके अलौकिक आँखों में शनि का वास था। मैं अतुलनीय की तुलना कैसे करूँ?
- (२२) आसीत् विचित्रमस्तिष्को, विशिष्टशक्तिधारकः।
प्रकर्तुं केन शक्नोमि, तुलनामतुलस्य च॥
आपका आश्चर्यकारी मस्तिष्क विशिष्ट प्रतिभा से युक्त था। मैं अतुलनीय की तुलना कैसे करूँ?
- (२३) भवद्स्कन्धौ धुरीणौ द्वा, अवहतां सुशासनम्।
प्रकर्तुं केन शक्नोमि, तुलनामतुलस्य च॥
आपके धुरंधर कंधों ने इस विशाल भैक्षवशासन का वहन किया। मैं अतुलनीय की तुलना कैसे करूँ?
- (२४) भवद्प्रलम्बकर्णौ द्वौ, सुश्रावकस्य लक्षणम्।
प्रकर्तुं केन शक्नोमि, तुलनामतुलस्य च॥
आपके प्रलंबन कान एक श्रेष्ठ श्रोता की निशानी थी। मैं अतुलनीय की तुलना कैसे करूँ?
- (२५) सदैवासीत् सुधावाण्यां, तृट् परिवर्तनस्य हि।
प्रकर्तुं केन शक्नोमि, तुलनामतुलस्य च॥
आपकी अमृतमयवाणी में सदा परिवर्तन की प्यास थी। मैं अतुलनीय की तुलना कैसे करूँ?

(शेष अगले अंक में)



ज्ञानशाला के विविध आयोजन



ज्ञानशाला : भाषण प्रतियोगिता

गांधीनगर।

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, बैंगलोर के तत्वावधान में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी पर ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों की भाषण प्रतियोगिता हुई। बच्चों ने असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री के बारे में लिखित में भी अपनी भावनाओं को प्रस्तुत किया। साध्वी सिद्धांतश्री जी व साध्वी दर्शितप्रभा जी ने सभी संभागियों के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। ज्ञानशाला कर्नाटक आंचलिक संयोजक माणक संचेती ने स्वागत वक्तव्य दिया।

महासभा के सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा ने कहा कि बच्चों ने बहुत ही सुंदर प्रस्तुति दी। बैंगलोर ज्ञानशाला निर्धारित प्रारूप के माध्यम से प्रशिक्षक बहनें अध्ययन करवा रही हैं और बच्चे कंठस्थ के साथ भाषण प्रतियोगिता में संभागी बनकर विकास की ओर आगे बढ़ रहे हैं। इस प्रतियोगिता में 9६ क्षेत्रों की ज्ञानशाला से ३० ज्ञानार्थियों की सराहनीय प्रस्तुति रही।

साध्वी लावण्यश्री जी ने बच्चों को चित्त समाधि में रहने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन लता गांधी ने किया। क्षेत्रीय संयोजिका नीता गादिया ने भाषण प्रतियोगिता के नियमों के बारे में जानकारी दी। इस कार्यक्रम के निर्णायक की भूमिका कांता लोढ़ा एवं रमेश कोठारी ने निभाई। जूनियर और सीनियर वर्ग में प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जूनियर में प्रथम स्थान अरव कोठारी, द्वितीय स्थान पलक टेवा, तृतीय स्थान वीर दक और मुक्ति मेहता ने व सीनियर ग्रुप में प्रथम स्थान कृति गांधी, द्वितीय स्थान स्नेहा टेवा, तृतीय स्थान पर नमन छाजेड़ और चारवी कटारिया रहे। इस कार्यक्रम में मोनिका गांधी अनीता नाहर, श्वेता मेहता, पवन बाई संचेती, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्णमाला पोकरणा ने भी विचार व्यक्त किया। बच्चों की सराहनीय प्रस्तुति से अभिभूत होकर महावीर जंबू गादिया ने बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप पारितोषिक दिए।

ज्ञानशाला

प्रशिक्षक परीक्षा

डी०वी० कॉलोनी, सिकंदराबाद।

साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथी महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा का आयोजन पूरे देश भर में आयोजित हुआ। इसी के अंतर्गत तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद द्वारा डी०वी० कॉलोनी भवन में हैदराबाद में संचालित २० ज्ञानशालाओं

की उन प्रशिक्षिकाओं की परीक्षाएँ हुईं जिनका ज्ञानशाला प्रशिक्षक कोर्स पूर्ण नहीं हुआ है उनकी परीक्षा संपन्न हुई। विज्ञ, विशारद और स्नातक कोर्स के लिए 9६ परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी।

इस अवसर पर ज्ञानशाला की आंध्र-तेलंगाना आंचलिक संयोजक अंजू बैद, तेलंगाना की क्षेत्रीय संयोजक सीमा दरसाणी, मुख्य परीक्षा व्यवस्थापक पुष्पा बरडिया, क्षेत्रीय सह-संयोजक संगीता गोलछा व सरिता नखत, परीक्षा व्यवस्था सहयोगी सुमन सेठिया, जैन तेरापंथ न्यूज से मीनाक्षी सुराणा, सिकंदराबाद सभा के अध्यक्ष सुरेश सुराणा, मंत्री सुशील संचेती, महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गीड़िया व ज्ञानशाला विभाग के संयोजक सुनील बोहरा, सहमंत्री धर्मेन्द्र चोरड़िया, मुकेश चोरड़िया, अरिहंत गुजरानी आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रशिक्षक प्रशिक्षण रिक्रेश कार्यशाला एवं प्रशिक्षक परीक्षा

गुवाहाटी।

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा निर्देशित तेरापंथी सभा द्वारा संचालित प्रशिक्षक प्रशिक्षण रिक्रेश कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें चारों ही शाखाओं की प्रशिक्षिकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण के पश्चात ज्ञानशाला संयोजक अरुण बोथरा ने सभी का स्वागत किया। आपके ज्ञान व प्रशिक्षण की कला और बेहतर हो इस उद्देश्य से इस कार्यशाला का आयोजन किया गया।

सभा के मंत्री निर्मल सामसुखा ने कहा कि हम प्रवाहवान हैं, ज्ञान का अर्जन करने के लिए हम विविध शैक्षणिक संस्था जाते हैं, आज की शिक्षा पद्धति से सीए, वकील,

शिक्षक आदि तो बन जाते हैं पर संस्कार ज्ञान के ऊपर कहीं ना कहीं प्रश्न चिह्न बना हुआ है। उन्होंने एक विचार के माध्यम से कहा शैक्षणिक योग्यता केवल पेपर तक ही सीमित रह जाती है। साथ रहती है तो हमारे संस्कार रूपी गुण जो बच्चों को निःस्वार्थ भाव से आप सभी प्रशिक्षिकाएँ संस्कारी बनाने के लिए ज्ञानशाला में दे रही हैं।

पूर्वोत्तर प्रभारी ने सभी प्रशिक्षिकाओं को सफलतम कार्यशाला व गुवाहाटी ज्ञानशाला उच्चतम स्थान प्राप्त करे, ऐसी शुभकामनाएँ प्रेषित की। प्रथम सत्र में प्रवक्ता उपासक अशोक सुराणा ने जैन दर्शन व जैन सिद्धांत के बारे में विचार प्रस्तुत किए। जिज्ञासाओं का समाधान किया। प्रवक्ता उपासिका पुष्पा गोलछा ने तत्त्व के बारे में अभिव्यक्ति दी।

दूसरे सत्र में प्रकाश बरडिया ने बताया कि बच्चों को कैसे पढ़ाएँ। किस प्रकार जोड़ें और आपसी वार्तालाप से, सरल भाषा में बच्चों के ज्ञान में वृद्धि कराएँ। इसी क्रम में प्रशिक्षिका कविता बांठिया ने कहा कि ३० वर्ष पहले जो ज्ञानशाला रूपी बीज गणाधिपति श्री तुलसी ने बोए थे, वह आज वटवृक्ष बन गया है।

प्रवक्ता उपासिका भारती महणोत ने भिक्षु विचार दर्शन में दया और दान के बारे में जानकारी दी। कंठस्थ व उच्चारण शुद्धि पर बहुत ही रोचक व सरल तरीके से अष्टकम व प्रतिक्रमण की पाटियों का उच्चारण प्रवक्ता उपासिका ललिता श्यामसुखा ने शिक्षिकाओं को करवाया।

अंत में संयोजक ने कहा कि हमें अपने अंदर अपनत्न के भाव को विकसित करना चाहिए एवं योग्य ज्ञानार्जन करना चाहिए। ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण परीक्षा संपन्न हुई। जिसमें विज्ञ, विशारद, स्नातक तीनों की ही परीक्षा देने वाली बहनों की सहभागिता रही।

चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में तेरापंथ सभा के तत्वावधान में विमला देवी रतनलाल मांडोत के तेरहवें मासखमण तप की संपन्नता पर तप अनुमोदना का कार्यक्रम आयोजित हुआ। सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने तप अनुमोदना कर कर्म निर्जरा की। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि तपस्या वह औषधि है, जो जीवन में सहजता, सौम्यता, सरलता व स्वस्थता का अवतरण करती है। तप से जब व्यक्ति का अंतर्मन अनुप्राणित होता है,

तपस्या परम औषधि है

तब आनंद की अनुभूति का द्वार उद्घाटित होता है। तप के तेज से तपस्वी का चेहरा चमकने लगता है। तपस्वी का आत्मबल, संकल्पबल, पारिवारिक सहयोग बल एवं साधु-साध्वियों का प्रेरणाबल जब प्रबल होता है तो मासखमण जैसी विशिष्ट तपस्याएँ होती हैं।

साध्वीश्री जी ने कहा कि मुझे लगता है विमलाबाई संपूर्ण तमिलनाडु या यों कहूँ कि दक्षिण भारत की संभवतया पहली तपस्विनी बहन है जो आज तेरहवें मासखमण का प्रत्याख्यान कर रही हैं। लगभग एक से इक्कीस तक की लड़ी पूरी

मुनिश्री का तप बना कीर्तिमान इंदौर।

उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि मुनि नमिकुमार जी को दीक्षित हुए अभी साढ़े पाँच वर्ष भी पूरे नहीं हुए और इतने मासखमण और 9५ तक की लड़ी पूर्ण करना बहुत बड़े साहस की बात है। गत बैंगलुरु चातुर्मास में तीन मासखमण व इस चातुर्मास में ६२ दिन की तपस्या के बाद २७ दिन का तप करना बहुत बड़ी बात है। यह सब गुरु कृपा से ही संभव हो पाया है। व्यक्ति को ज्यों-ज्यों अवस्था आती है शरीर में पौष्टिक पदार्थों की आवश्यकता होती है। परंतु मैं देख रहा हूँ कि मुनि नमिकुमार जी जाप, ध्यान, स्वाध्याय श्रवण करते हुए पूर्ण स्वावलंबी रहने का प्रयास कर रहे हैं।

मुनिश्री की तपस्या के चर्चा सुनकर सबको आश्चर्य होता है कि इस अवस्था में इस प्रकार का तप क्षयोपशम बिना संभव नहीं है।

मुनिश्री की तपस्या सुन जयमल जी संप्रदाय के आगम ज्ञाता तत्त्वज्ञानी मुनि सुमति कुमार जी, डॉक्टर जयघोष मुनि सुखसाता पूछने एवं तब अनुमोदन के लिए पधारे। श्रमण संघ के अभिग्रहधारी तपस्वी राजेश मुनि जी, चेतन मुनि जी भी पधारे। आगंतुक सभी संत मुनिश्री के मनोबल धृतिबल को देखकर बाग-बाग हो गए।

मुनि कमल कुमार जी स्वामी ने बताया कि इस प्रकार की तपस्या करने वाले संत केवल महाश्रमण जी के शासनकाल में ही प्रथम नहीं बल्कि कई आचार्यों के शासनकाल में दुर्लभ हैं। मुनि अमन कुमार जी भी कुछ दिनों से एकांतर तप कर रहे हैं।

श्रावक जिनशासन के अभिन्न अंग

गुड़ियारी, रायपुर।

रायपुर के गुड़ियारी स्थित मारुति मंगलम् भवन में छत्तीसगढ़ स्तरीय श्रावक सम्मेलन का विराट आयोजन मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा द्वारा किया गया।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि जिनशासन में श्रावक अभिन्न अंग माने गए हैं। श्रावकों को साधु-साध्वियों के माता-पिता की उपमा दी गई है। किसी भी संगठन में विकास तभी होता है जब सब दायित्वबोध अनुभव करें। श्रावक कार्यकर्ता तैयार होने जरूरी हैं। इसके लिए प्रशिक्षण जरूरी है। प्रमोद भावना का विकास समाज में होना चाहिए। मुनिश्री ने स्वरचित गीत का संगान करते हुए छत्तीसगढ़ के श्रावकों की श्रद्धा भावना का उल्लेख किया।

बालमुनि काव्यकुमार जी ने कहा कि श्रावक श्रद्धालु और विश्वासी होता है बालमुनि ने अंग्रेजी में वक्तव्य दिया।

तेरापंथी महासभा उपाध्यक्ष अशोक तातेड़, तेरापंथी सभा, रायपुर अध्यक्ष सुरेंद्र चोरड़िया, दानमल पोरवाल, पद्मश्री सुरेंद्र दुबे आदि ने विचार रखे। तेमम ने मंगलाचरण किया। कन्या मंडल ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के बच्चों ने श्रावक शब्दचित्र की प्रस्तुति दी। संचालन नेहा जैन और ऋतु चोरड़िया ने किया।

दूसरा सत्र—'मेरा तेरापंथ महान क्यों?' विषय पर चेन्नई से समागत राकेश खटेड़ ने अभिभाषण दिया। सत्र का संचालन कौशल गांधी ने किया।

तीसरे सत्र में चर्चा-परिचर्चा का कार्यक्रम रहा। जिसमें खुलकर अनेक विषयों पर चर्चा हुई। जिसमें मुख्य रूप से जगदलपुर, दुर्ग, राजनांदगाँव, सरायपाली, भिलाई, कोरबा आदि क्षेत्रों से आए हुए प्रतिनिधियों ने अपने विचार रखे। इस सत्र का संचालन रितु चोरड़िया ने किया।

कर चुकी हैं। हमारे चातुर्मास में दो बड़ी तपस्याएँ की हैं। पूर्व में आठ की तपस्या एवं आज मासखमण। एक चातुर्मास में दो बड़ी तपस्या करना बहुत बड़ी बात है। तप के पथ पर निरंतर अग्रसर रहना, हमारी यही मंगलकामना है। रतनलाल एवं पूरा मांडोत परिवार साधुवाद का पात्र है, जिन्होंने तप में सहयोग किया है। मांडोत परिवार में और तपस्वी तैयार हों। साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी व साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने लंबे तप का सुदीर्घ गीत प्रस्तुत कर परिषद को रोमांचित कर

दिया। तेरापंथ सभाध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया ने शुभकामना प्रेषित की। मनोज डूंगरवाल ने तप-संदेश का वाचन किया। मांडोत परिवार की बहनों ने गीत प्रस्तुत किया। पोते-पोतियों व पुत्र-वधुओं ने नाटिका के द्वारा दादीसा के तप की वर्धापना की। संचालन साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने किया। चौपड़ा परिवार की बहनों ने गीत व निधि ने भाव व्यक्त किए। तेरापंथ सभा द्वारा विमलाबाई, भाग्यवंतीबाई तथा भंवरीदेवी मांडोत का मोमेंटो द्वारा अभिनंदन किया गया। संचालन मंत्री गजेन्द्र खाटेड़ ने किया।



टीपीएफ का ५वाँ राष्ट्रीय कॉर्पोरेट अधिवेशन आयोजित

भीलवाड़ा।

टीपीएफ द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में ५वाँ राष्ट्रीय कॉर्पोरेट अधिवेशन महाश्रमण सभागार, तेरापंथ नगर में आयोजित किया गया। अधिवेशन के उद्घाटन में शुभारंभ टीपीएफ गीत का गान किया गया। टीपीएफ आध्यात्मिक पर्यवेक्षक डॉ० मुनि रजनीश कुमार जी ने कहा कि जिंदगी की चुनौतियों को पार कर ही सफलता मिलती है। दिन-भर की भागदौड़ भरी जिंदगी में घर के बच्चों को संस्कारवान बनाना भी एक चुनौती है। व्यवसाय में प्रगति करना भी एक चुनौती है। आध्यात्मिकता से प्रामाणिकता और नैतिकता का समावेश करना आसान हो जाता है।

कॉन्फ्रेंस संयोजक नवीन वागरेचा ने कॉर्पोरेट अधिवेशन की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की और पधारे हुए सभी संभागियों का स्वागत किया। अधिवेशन के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के न्यायाधीश गौतम चोरड़िया ने कॉर्पोरेट व्यवसाय एवं न्यायिक व्यवस्था में कैसे तालमेल हो सकते हैं उसके बारे में बताया तथा थीम “चैलेंस योरसेल्फ” को कैसे चरितार्थ करें

इस पर अपना उद्बोधन दिया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने प्रेरणा पाथेय में कहा कि दो शब्द व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण है अनुस्त्रोत व प्रतिस्त्रोत। अनुस्त्रोत में चलना आसान होता है, लेकिन प्रति स्त्रोत में चलना कठिन होता है। प्रवाह के साथ-साथ आसानी से चला जा सकता है, प्रवाह के विपरीत चलना कठिन होता है। लकड़ी का टुकड़ा पानी के साथ-साथ आसानी से तैर सकता है, हवा यदि पीछे से चले जो रास्ता आसान है, लेकिन अगर सामने से हो तो चलने में मुश्किल होती है। आज व्यक्ति बहुत अधिक सुविधायुक्त जीवन-यापन करने में लगा हुआ है, लेकिन व्यक्तित्व निर्माण, त्याग और कम सुविधाओं में जीवन-यापन करने से ही हो सकता है। जो लोग आर्थिक मामलों में जुड़े हुए होते हैं उन्हें पैसों के मोल-भाव में नैतिक होना अति आवश्यक है। अत्यधिक पैसे के कारण गलत प्रवृत्तियाँ भी पनप सकती हैं। ऐसे में व्यक्ति को ईमानदारी रखते हुए ऑनैस्टी इज़ द बेस्ट पॉलिसी के वाक्य को चरितार्थ करते हुए जीवन-यापन करना चाहिए।

आचार्यप्रवर ने जीवन में कम्फर्टजोन

से बाहर निकलकर और अच्छे लोगों के जीवन से प्रेरणा लेकर स्वयं को चैलेंस देकर अपने जीवन को प्रगतिशील बनाने का पाथेय दिया।

अधिवेशन सत्र के द्वितीय सत्र में साध्वी समताप्रभा जी ने कहा कि लोगों की भीड़ में व्यक्ति अपने आपको भूल जाता है। व्यक्ति के मन में भिन्न-भिन्न भय के कारण व्यक्ति कम्फर्ट जोन के बाहर आने में डरता है, जिसके कारण बंधन हो जाते हैं और इसमें व्यक्ति की प्रगति रुक जाती है। पैसा इकट्ठा करना और कंजूस होने में फर्क है। पैसा कमाने से ज्यादा पैसा का प्रबंधन ज्यादा महत्वपूर्ण है और चुनौतीपूर्ण है। दुनिया के करीब जा रहे हैं और स्वयं से दूर जा रहे हैं। जरूरत पड़ने पर ना कहने की कला भी आनी चाहिए।

अधिवेशन में छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के न्यायाधीश गौतम चोरड़िया, सांसद सुभाष बहेड़िया, ओस्तवाल ग्रुप एम०डी० महेंद्र ओस्तवाल, सी०आर०आई०सी० चेयरमैन सीए नीलेश गुप्ता, सीए ब्रांच चेयरमैन पिरेश जैन, सीए शाखा चेयरमैन सुमित कच्छरा, सीएमए शाखा चेयरमैन, बी०डी० अग्रवाल,

टेक्सबार अध्यक्ष अतुल सोमानी, सीए निर्भीक गांधी, के०सी० बाहेती, सीएस नितिन मेहता आदि कई सीए, सीएस, सीएमए मौजूद थे।

अधिवेशन के दूसरे दिन प्रथम सत्र के दौरान ओस्तवाल ग्रुप चेयरमैन महेंद्र ओस्तवाल ने व्यापार में नैतिकता के मूल्यों के साथ भी कैसे सफलता हासिल हो सकती है। अपनी जीवन की सफलता की कहानी के साथ इस पर प्रकाश डाला।

मुनि निकुंज कुमार जी ने कहा कि हम पूरी दुनिया की चिंता करते हैं, अमेरिका में क्या हो रहा है, जबकि जरूरत अपने बारे में चिंतन करने की है। स्वयं का निरीक्षण करने की है। हमको मैं कौन हूँ, यह सोचना होगा।

मुनि मुकुल कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति के पास विकसित चिंतन क्षमता तो है, परंतु परिष्कृत चिंतन क्षमता से व्यक्ति चुनौतियों से पार लग सकता है। जीवन के उन कार्यों को बदलना है, जिससे चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। व्यक्ति को तनाव के प्रबंधन का सूत्र जीवन में लाना चाहिए। हमारे भीतर भी समस्त ब्रह्मांड की ऊर्जा मौजूद है। जरूरत है तो

सिर्फ उस ऊर्जा को जागृत करने की।

मुनि रजनीश कुमार जी ने कहा कि आर्थिक पक्ष के साथ आध्यात्मिक जीवन में भी आगे बढ़ना जरूरी है। आज मनुष्य मानसिक रूप से शांत नहीं है। मानसिक शांति के लिए प्रेक्षाध्यान को अपनाया जा सकता है। साथ ही मुनिश्री ने कुछ प्रयोग करवाए, जिसे मन शांत होता है। मानसिक शांति मिलती है।

भीलवाड़ा सांसद सुभाष बहेड़िया ने कहा कि हमेशा नई जगह जाना पड़ता है तो कुछ न कुछ नया सुनकर और उससे कुछ न कुछ नया जीवन में उतारकर जीवन को प्रगतिशील रखना ही सही मायनों में समर्थ प्रयास है। व्यक्ति को व्यवस्थित जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

टीपीएफ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, सहमंत्री नवीन वागरेचा, विनोद पितलिया, एलएल गांधी, जोन चेयरमैन दिलीप कावड़िया, शाखा अध्यक्ष राकेश सुतरिया, मंत्री अभिषेक कोठारी, सहमंत्री अजय नीलखा, सौरभ कावड़िया, कौशल आंचलिया, बी०एल० बड़ोला, प्रणेता बड़ोला, सोनल मारू, पूजा जैन आदि उपस्थित रहे।

अणुव्रत गॉट टैलेंट फिनाले का आयोजन

घाटकोपर, मुंबई।

अणुव्रत समिति, मुंबई के तत्वावधान में अणुव्रत गॉट टैलेंट-२०२१ का ग्रांड फिनाले व विजेता पुरस्कार समारोह घाटकोपर तेरापंथ भवन में समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी एवं समणीवृंद के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत समणीजी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। मंगलाचरण अरविंद सोनी ने किया। अध्यक्ष कंचन सोनी ने आचार संहिता का वाचन किया व सभी पदाधिकारीगण का स्वागत किया।

अणुव्रत गॉट टैलेंट-२०२१ का शुभारंभ अगस्त माह में आगम मनीषी प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में हुआ था। विभिन्न प्रतियोगिता का समावेश कर अणुव्रत को जनव्यापी बनाना इसका लक्ष्य था। शब्दों की जोली, स्वर लहरी, टेप योर फिट, लिटिल चैम्पस, आओ सुनाएँ कहानी व अणुव्रत दर्शन क्विज की ६ प्रतियोगिता थी, जिसमें कुल ६६० प्रतिभागियों ने भाग लिया।

फिनाले क्विज में ४ राउंड थे। पहला राउंड मल्टीपल चॉइस क्वेश्चन, दूसरा राउंड एक शब्द में उत्तर, तीसरा राउंड चित्र बनाएँ और अनुमान लगाएँ व चौथा राउंड अणुव्रत के प्रोडक्ट का विज्ञापन था।

प्रश्न जैन धर्म, तेरापंथ, अणुव्रत, सामान्य ज्ञान, इतिहास, भूगोल, पौराणिक कथाओं पर आधारित थे। ग्रैंड फिनाले क्विज के विजेता गोरेगाँव क्षेत्र से प्रतिमा सांखला, पिंकी सांखला, ममता चिप्पड़, अनुपमा

सांखला रहे।

शब्दों की जोली के विजेता रहे—

१० से १५ आयु—प्रथम प्रांजल तातेड़, द्वितीय धृति लुनिया, तृतीय वंदित मेहता रहे।

१५ से ३० आयु—प्रथम खान तहरीम, द्वितीय वृष्टि धाकड़, तृतीय वृत्तिका डूंगरवाल रहे।

३० से अधिक—प्रथम संगीता बाफना, द्वितीय सीमा डूंगरवाल, तृतीय यशवंत बाफना रहे।

आओ सुनाएँ कहानी के विजेता—प्रथम पर्व आच्छा, द्वितीय ध्रुवी छजेड़ व तृतीय तनिश इंटोदिया रहे।

लिटिल चैम्पस के विजेता—प्रथम प्रीत जैन, द्वितीय मीतीशा जैन, तृतीय दीया परमार रहे।

स्वर लहरी के विजेता रहे—

४ से १० आयु—प्रथम नीति दुगड़, द्वितीय करण डागा, तृतीय ग्रंथ विनाकिया रहे।

१० से १५ आयु—प्रथम पार्थ दुगड़, द्वितीय दक्ष हिंगड़, तृतीय प्रेक्षा सुराणा रहे।

१५ से अधिक—प्रथम भव्या कावड़िया, द्वितीय सीमा बाबेल, तृतीय विकास मेहता रहे।

टेप योर फिट के विजेता रहे—

४ से १० आयु—प्रथम वृष्टि इंटोदिया व अंशिका पामेचा, द्वितीय वंदित मेहता, तृतीय कृषा सिंघवी रहे।

१० से १५ आयु—प्रथम जनक बदाला,

द्वितीय मौली खाटेड़, तृतीय प्रीति कोठारी रहे।

१५ से अधिक—प्रथम ठाणे कन्या मंडल (कोपरी-सेंट्रल-वागले), द्वितीय विरार कन्या मंडल, तृतीय सजीली जैन रहे।

प्रतियोगिताओं के निर्णायक की भूमिका ललिता जोगड़, रमेश पटावरी, माधुरी जैन, निलेश बाफना, दिव्या बोलिया, हिना चेचानी व शुभद्रा शर्मा ने निभाई। ललिता जोगड़ ने विचार रखे।

समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी ने अणुव्रत की परिभाषा बताते हुए कहा कि सिर्फ जानने से कुछ हासिल नहीं होगा, इसे जीवन में उतारने व अपनाने की जरूरत है समणी सुमनप्रज्ञा जी व दिव्या बोलिया ने अपने सुमधुर स्वरों से वातावरण को मंगलमय बनाया।

कार्यक्रम के प्रायोजक मदनलाल, महेंद्रकुमार तातेड़ थे। विभिन्न प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले सभी विजेताओं का सम्मान किया गया। अधिकतम सहभागी क्षेत्र का पुरस्कार नवी मुंबई क्षेत्र को दिया गया।

अणुव्रत समिति मुंबई ने चलाया एक वर्चुअल नशामुक्ति अभियान, मुंबई के सभी क्षेत्र ने वीडियो के माध्यम से बताया कैसे व्यसनमुक्त रहे इंसान। इसमें यू-ट्यूब पर सबसे अधिक वियूज़, लाइक्स व कमेंट्स प्राप्त करने वाला पनवेल क्षेत्र से हेमलता बाफना, ललिता बाफना, अंजना बाफना,

अर्पिता बाफना विजेता रहे।

अणुव्रत गॉट टैलेंट-२०२१ के संयोजक प्रियंका सिंघवी, सह-संयोजक विजेंद्र मेहता, स्वाति सोनी व अंकित डांगी का इस इवेंट को सफलतम बनाने में अधिक श्रम रहा। कार्यक्रम को सफल बनाने में घाटकोपर क्षेत्रीय संयोजक राजेश कुमठ व

सह-संयोजक मुकेश धाकड़, धनराज डांगी का पूर्ण सहयोग मिला।

अणुव्रत गॉट टैलेंट-२०२१ की सफलता के लिए सभी क्षेत्रीय संयोजक व सह-संयोजक का विशेष श्रम रहा। कार्यक्रम का संचालन प्रियंका सिंघवी ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री वनिता बाफना ने किया।

ज्ञानशाला दिवस

पाली।

साध्वी हेमरेखा जी, साध्वी प्रसन्नप्रभा जी एवं साध्वी ऋतुयशा जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में ज्ञानशाला दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। तेयुप मंत्री विनोद भंसाली ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश गौतम चोरड़िया, उनकी धर्मपत्नी संगीता चोरड़िया, डॉ० मिथुन वाडेकर व डॉ० नयना वाडेकर भी उपस्थित थे।

सर्वप्रथम बच्चों द्वारा रैली के रूप में तेरापंथ भवन में प्रवेश किया। फिर साध्वीश्री जी के मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। ज्ञानशाला के विद्यार्थियों द्वारा मंगलाचरण, अभिनय, गीतिका, समुह नृत्य, योगा, नशा मुक्ति संदेश, लघु नाटिका, जीवन-विज्ञान पर आधारित अनेक प्रस्तुतियाँ दी गईं।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा मंत्री अनिल भंसाली, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण बालड़, महिला मंडल अध्यक्ष उषा मरलेचा, ज्ञानशाला व्यवस्थापक भुरचंद तातेड़ एवं सभा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल के सदस्यों की उपस्थित रही। कार्यक्रम में जैन विद्या परीक्षा में ऑल इंडिया में मेरिट में आए विद्यार्थियों को एवं शिशु संस्कार व प्रशिक्षक परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन स्वरूप पारितोषिक द्वारा सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के अंत में ज्ञानशाला संयोजक ललित मांडोत द्वारा कार्यक्रम में आए सभी अतिथियों व सदस्यों का आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए साध्वीश्री जी और सभी प्रशिक्षिकाओं का आभार व्यक्त किया। ज्ञानशाला दिवस के कार्यक्रम का संचालन पाली ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षक उषा मरलेचा ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

मोहं जंति णरा
असंवुडा

जो असंवृत होते हैं,
वे मोह को
प्राप्त होते हैं।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 4 • 1 - 7 नवंबर, 2021



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 30-10-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

**हम समय का आत्मकल्याण की दृष्टि से
यथोचित उपयोग करें : आचार्यश्री महाश्रमण**



भीलवाड़ा, 23 अक्टूबर, 2021

हमारी ज्ञान चेतना को उज्ज्वल बनाने वाले परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि सुयगड़ो आगम में शास्त्रकार ने बंधन की बात प्रथम श्लोक में कही थी। बंधन में हिंसा और परिग्रह इन दो तत्त्वों का वर्णन चल रहा है। प्रस्तुत श्लोक में शास्त्रकार ने कहा है कि एक बात पर ध्यान देना चाहिए कि धन और अपने सगे भाई-बहन।

गृहस्थ के पास धन और भाई-बहन हो सकते हैं। माँ-बाप से नैकट्य हो सकता है, उनके अलावा भाई-बहन का भी अपना नैकट्य होता है। धन के प्रति ममत्व भी गृहस्थ के मन में हो सकता है। पर धन हो या भाई-बहन ये त्राण नहीं दे सकते। एक सीमा तक सहयोग में भूमिका अदा कर सकते हैं। अंतिम त्राण नहीं दे सकते हैं।

कर्म जब उदय में आते हैं, तब स्वयं को ही भोगने पड़ते हैं। व्यावहारिक संदर्भ में त्राण दे सकते हैं, पर निश्चय के संदर्भ में खुद के कर्म उदय आने पर दूसरे कितने त्राण बन सकते हैं। काल सौकरिक कसाई की मृत्यु के पश्चात उसके परिवार के मुखिया के रूप में उसके बेटे का नियुक्त करने का प्रसंग समझाया। सुलस ने कहा कि मैं रोज ५०० भैंसों का वध नहीं कर सकता। हिंसा तो अपने आपमें नरक का हेतु है।

पारिवारिक जनों के कहने पर भी सुलस ने कुल्हाड़ी का वार भैंसे पर न कर स्वयं के पैर पर किया और बोला मेरे पैरों में पीड़ा हो

रही है, आप लोग इसका हिस्सा बँटाइए। दुःख में सहभागी बनें। पारिवारिकजन बोले-दुःख को बाँटा नहीं जा सकता, खुद को ही भोगना पड़ता है। सुलस बोला-तो आपने कैसे कहा था कि भैंसे को मारने पर जो पाप लगेगा उसका हिस्सा हम बँटा लेंगे।

सुलस बोला-कोई पाप का हिस्सा बँटा ही नहीं सकता तो मैं पाप कर्म क्यों करूँ? पीड़ा होती है, तो सगा भाई भी कितना बँटा सकता है, स्वयं को ही भोगना पड़ता है। गृहस्थों के पास करोड़ों की धन-संपत्ति हो सकती है, पर बीमारी में तो डॉक्टर भी उत्तर दे देता है। वो करोड़ों की धन-संपत्ति क्या काम आए? वो वेदना दूर नहीं कर सकती।

इस बात का चिंतन करना चाहिए कि धन या भाई-बहन त्राण नहीं दे सकते। दूसरी

बात है कि जीवन दौड़ रहा है, मृत्यु की ओर। इसका हम अनुप्रेक्षण-चिंतन करें। जैसे सर्दी के दिन भागे जा रहे हैं, वैसे ये जीवन भागा जा रहा है। जन्मदिवस आता है, इसकी एक सच्चाई यह भी है कि मेरा एक साल तो गया। फिर क्या करें?

इसके लिए कर्मों को तोड़ने की साधना करें। बंधन को तोड़ने की साधना करें। वह साधना करते हैं, तो फिर वह जीवन भागे तो भागे। दिन-रात की ६० घड़ियाँ होती हैं। कितनी घड़ियाँ धर्म-ध्यान में लगाते हैं। २४ मिनट की एक घड़ी। गृहस्थ सोचे इन साठ घड़ियों में कुछ हिस्सा धर्म में लगाता हूँ या नहीं। शेष दो घड़ी का समय भी साधना के लिए निकालते हैं, तो अच्छी बात है।

(शेष पृष्ठ २ पर)



**अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश
अपेक्षित होता है : आचार्यश्री महाश्रमण**



भीलवाड़ा, २२ अक्टूबर, २०२१

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि रात्रि का समय है, मुख्य प्रवचन कार्यक्रम रात्री में हो रहा है। दिन बीत गया, रात आ गई। रात बीतेगी दिन आ जाएगा। यह काल का क्रम चल रहा है। महीने में दो पक्ष होते हैं। एक कृष्ण पक्ष और दूसरा शुक्ल पक्ष। इसी प्रकार अहोरात्र के दो हिस्से कृष्ण और शुक्ल होते हैं। दिन को शुक्ल और रात्रि को कृष्ण के रूप में मान लें।

हर दिन ये दो विभाग आते हैं। कवि ने कहा है कि हर महीने में दो पक्ष हैं जिन्हें कृष्ण और शुक्ल कहा गया है। जबकि जितनी चाँदनी शुक्ल पक्ष में होती है, उतनी ही कृष्ण पक्ष में आती है। पर यश पुण्याई से मिलता है। पर शुक्ल पक्ष-कृष्ण पक्ष इसलिए कहा गया है कि कृष्ण पक्ष में अंधकार की वर्धमानता होती है और शुक्ल पक्ष में चाँदनी की वर्धमानता होती है। वो अभिमुखता का अंतर पड़ जाता है। जिधर अभिमुखता है, उसका महत्त्व है।

आदमी के जीवन में कभी अंधकार आ सकता है, कभी प्रकाश आ सकता है। जब जीवन में निराशा का कुहासा आ जाता है, तो एक प्रकार का अंधकार सा आ जाता है। जब चित्त में प्रसन्नता है, आशा की किरण है, उत्साह से आदमी कार्य करता है, आगे बढ़ता है, तो वह एक प्रकाश का समय होता है। आदमी के जीवन के आचरणों में भी कहीं अंधेरा है, कहीं प्रकाश है।

जीवन को अध्रुव कहा गया है। जीवन आदमी का अशाश्वत है। जीवन के बाद अगला जीवन प्राप्त होता है। मनुष्य यह सोचे कि मृत्यु के बाद मेरा क्या होगा? आगे

मैं कहाँ जा सकता हूँ, आगे के लिए मैं क्या कर रहा हूँ। वर्तमान जीवन तो छोटा सा है। देवगति और नरक गति का तो कितना लंबा आयुष्य है। पता नहीं आगे कितने जन्म लेने पड़ सकते हैं, आगे तो लंबा काल है। इस छोटे से काल का उपयोग लंबे काल के संदर्भ में भी करें। वर्तमान भी अच्छा रहे और आगे के जन्म भी अच्छा रहे।

आगे जन्म-मरण कम हो जाए, मोक्ष हमें जल्दी मिल जाए। यह एक प्रसंग से समझाया। भावी प्राणी को तो सीमित जन्म लेने पड़ते हैं, पर अभव्य को तो अनंत-अनंत जन्म लेने पड़ते हैं। सीमित जन्म हो गए तो मुक्ति तो शीघ्र हो सकेगी। हमें जन्म-मरण ज्यादा न करना पड़े इसके लिए साधना, प्रयास, पुरुषार्थ करना चाहिए। छोटे नजदीक के देवलोकों में जाना इसलिए लाभदायी हो सकता है कि वहाँ का आयुष्य ऊपर के देवलोकों से बहुत कम है।

देवलोक कितना ऊँचा मिलेगा एक बात है, मुक्ति कितनी जल्दी मिलेगी वो एक बात है। हमें आगे के बारे में भी सोचना चाहिए। आगे का जीवन हमारा कैसे अच्छा रहे, उसके लिए वर्तमान पर ध्यान देना जरूरी है। हमारा वर्तमान जीवन वर्तमान के लिए ही न हो, हमारा वर्तमान जीवन बहुततया तो भविष्य के लिए हो।

मोक्ष प्राप्ति के लिए मोक्ष मार्ग को जानकर भोगों से निवृत्त बनें। भोगों को छोड़कर योग के मार्ग पर चलो। त्याग के पथ पर चलो। भोग अधर्म है, त्याग धर्म है। जीवन में जितना त्याग-तप का क्रम आगे बढ़ता है, सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य की साधना अच्छी होती है, तो आदमी सिद्धि गति की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

भगवान महावीर निर्वाण दिवस : दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

---: तैरापंथ टाइम्स परिवार :---



गृहस्थ परिग्रह का अल्पीकरण करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १७ अक्टूबर, २०२१

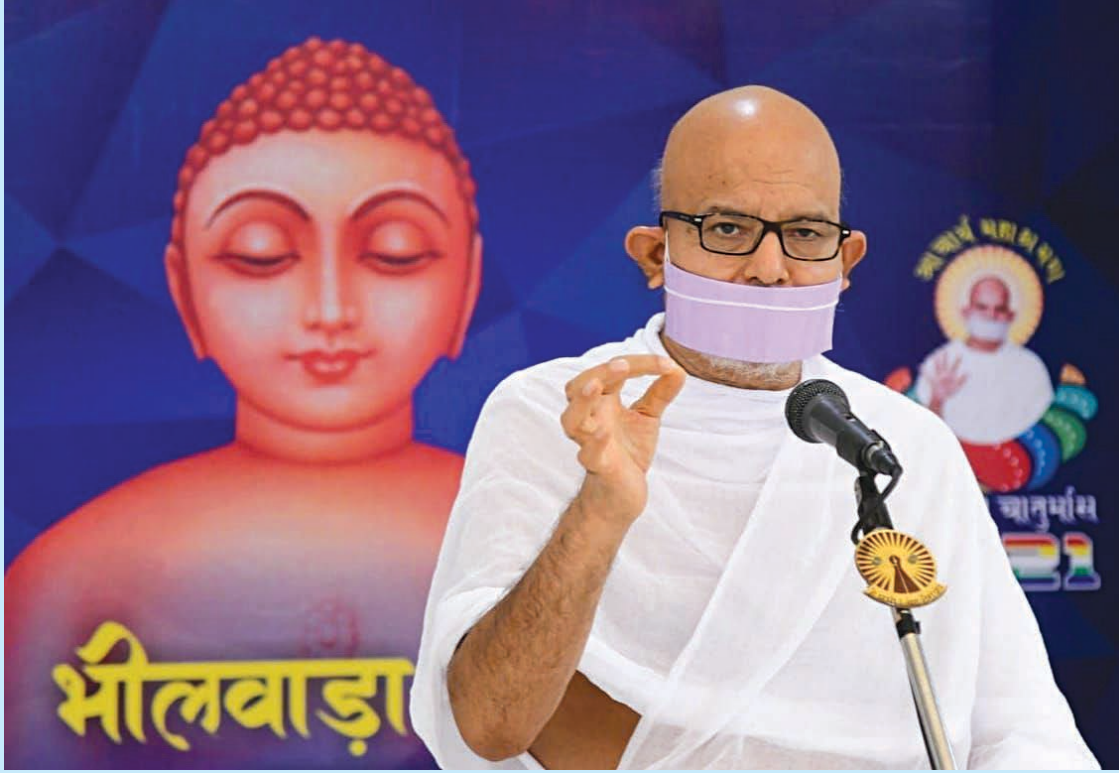
आगम ज्ञाता परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा देते हुए फरमाया कि सूर्यगडो आगम में बोधि प्राप्ति, बंधन और उसे तोड़ने की बात बताई गई है। बंधन अनेक हो सकते हैं। एक बड़ा बंधन है, परिग्रह। परिग्रह के साथ ममत्व, आसक्ति और मूर्च्छा की बात है। आदमी पदार्थों और प्राणी में भी मूर्च्छित हो सकता है।

चेतनावान पदार्थ और चेतना शून्य पदार्थ इनमें जो ममत्व भाव रखता है। परिग्रह की बुद्धि रखता है, दूसरों के परिग्रह का अनुमोदन करता है, इस तरह परिग्रह से दत्त हुई चेतना वाला जो मनुष्य होता है, वह दुःख से मुक्त नहीं हो सकता।

धन-पदार्थ नहीं मिलने की स्थिति भी आदमी को दुःखी बना देती है। प्राप्त वस्तु चली गई तो दुःखी। प्राप्त वस्तु पास में पड़ी है, उसकी सुरक्षा के लिए भी कई बार तनाव रहता है, यह एक प्रसंग से समझाया कि जो खतरा था वो मैंने नदी में फेंक दिया। अतृप्ति का भी शांति भंग करने में हाथ हो सकता है।

चार बातों से परिग्रह दुःख पैदा कर सकता है। अप्राप्त है, तो पाने की लालसा, प्राप्त पास में है, तो उसकी सुरक्षा की दृष्टि से दुःख या तनाव प्राप्त है, वो नष्ट हो जाए तो दुःख। चौथा है—अतृप्ति का दुःख और मिले-और मिले। जो परिग्रह में रत है, ममत्व है, वो व्यक्ति परिग्रह से मुक्त नहीं बन सकता।

श्रावक बारह व्रतों में पाँचवाँ व्रत है—इच्छा-परिमाण। यह एक तरह से परिग्रह से अपरिग्रह की ओर गति है। गृहस्थ है, पूर्णतया तो परिग्रह न छोड़ सके, पर इच्छाओं का परिमाण कर ले। पदार्थ का परिमाण कर ले। यह इच्छा-परिमाण दुःख-मुक्ति की ओर गति है।



हिंसा और परिग्रह दोनों जुड़े हुए हैं। परिग्रह है तो हिंसा की बात हो सकती है। मनुष्य यह प्रयास करे कि जीवन जीने के लिए पदार्थ चाहिए पर ममत्व बुद्धि-आसक्ति कम करो। उम्र होने पर तो आदमी को अपरिग्रह पर ध्यान देना चाहिए। शरीर के प्रति भी ममत्व हो सकता है। शरीर की पकड़ को कम करो। पदार्थों की पकड़ भी कम करो, उनमें आसक्ति मत रहो।

परिग्रह का जो त्याग करता है, वो चेतना को ऊर्ध्वारोहण की ओर ले जा सकता है। आचार्य तुलसी ने तो आचार्य-पद का भी विसर्जन कर दिया। पद भी परिग्रह हो सकता है। पद के लिए लालसा रहती है। पद, पैसा और प्रतिष्ठा ये ऐसी चीजें हैं कि इनका परिग्रह हो जाता है, आदमी दुःखी बन जाता है।

परिग्रह का संचय करने वाला,

परिग्रह की अनुमोदना करने वाला, मूर्च्छा-ममत्व बुद्धि रखने वाला है, वह व्यक्ति दुःख से मुक्त नहीं होता। आप लोग गृहस्थ हैं, परिग्रह का जितना अल्पीकरण संभव हो सके, वो करने का प्रयास करें। वृद्धावस्था आ जाए तो परिग्रह का अल्पीकरण करें।

कई बार आदमी कहता है, मुझे पद लेने का त्याग करा दो, पर कई बार पद भी काम का होता है। सब पद छोड़ देंगे तो समाज-देश को कौन संभालेगा। पद पर है, तो लोग बात को मानेंगे। आदमी परिग्रह में विवेक रखे, ममत्व को छोड़े। परिग्रह का त्याग करने की दिशा में आगे बढ़े, तो दुःख-मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि पूज्यप्रवर के प्रवचन से कितने लोग बदल रहे हैं। अनेक लोगों को नया बोध-नया

जीवन मिलता है। मनुष्य जन्म जो दुर्लभ है, हमें सुलभ है, इसका हम कितना लाभ उठा सकें, यह हमारे चिंतन का विषय होना चाहिए। इस संसार में तीन चीजें बहुत दुर्लभ हैं। वे भाग्य से या देवकृत उपलब्ध होती हैं। वे हैं—मनुष्य जन्म, मुमुक्षा का भाव और महापुरुषों का सान्निध्य।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि प्रतिसंस्लीनता का एक प्रकार है—स्पर्श। स्पर्श से मन में चंचलता आ जाती है और मन को प्रिय लगती है। साधना और धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ने वाला व्यक्ति संस्लीनता के बारे में चिंतन करेगा कि मैं इंद्रियों की प्रतिसंस्लीनता करूँ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हम अपने आपको अच्छे कार्यों में व्यस्त रखें तो दुःखों से मुक्त रह सकते हैं।



अर्थ और काम पर धर्म का... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

परम पूज्य आचार्य भिक्षु और जयाचार्य के साहित्य को देखें, कितना ज्ञान भरा है। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी का कितना साहित्य है। स्वाध्याय करने से कई बार बड़ा आलोक मिलता है। पथ दर्शन अच्छा मिल सकता है, जीवन की शैली अच्छी हो सकती है। आदमी का दृष्टिकोण अच्छा हो सकता है। आदमी अध्यात्म और मोक्ष की दिशा में अच्छी गति-प्रगति भी कर सकता है।

गृहस्थ के जीवन में अर्थ भी अपेक्षित होता है। चार पुरुषार्थ बताए गए हैं—अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष। अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश रहे। अर्थ और काम रथ के दो पहिए हैं, धर्म सारथी के रूप में हैं। हम अपने जीवन में वर्तमान को भी देखें और भविष्य को और विशेषतया देखें ताकि हमारा यह वर्तमान भविष्य का भावित करने वाला बन सके।

आज भी पूज्यप्रवर ने नगर भ्रमण हेतु चतुर्मास स्थल से विहार किया। पूज्यप्रवर ने कोठारी विद्या स्कूल में विद्यार्थियों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करवाया। संसारपक्षीय संस्था में मुनि प्रतीक कुमार जी ने गुरु चरणों में प्रस्तुति दी। पूज्यप्रवर बापनगर के महाप्रज्ञ सेवा संस्थान में पधारें। आजादनगर के महाप्रज्ञ भवन में पूज्यप्रवर का पधारना हुआ।

हम समय का आत्मकल्याण की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कम से कम एक सामायिक तो रोज हो जाए। शनिवार की ७ से ८ की भी सामायिक हो। जहाँ भी रहें समय निकालें। कुछ समय स्वयं के लिए निकालें। समय बीत रहा है। गीत में भी सुंदर कहा गया है—सजग बनो बीती जा रही घड़ी। गीत का सुमधुर संगान किया। शास्त्रकार ने कहा है कि जीवन दौड़ रहा है, समय बीत रहा है। हम समय का आत्म-कल्याण की दृष्टि से यथोचित उपयोग करने का प्रयास करें, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। पूज्यप्रवर की सन्निधि में टीपीएफ के तत्त्वावधान में मेधावी सम्मान समारोह-२०२१ का आयोजन हुआ। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि साधक संकल्प करता है कि कभी षट्-जीवनिकाय की हिंसा नहीं करूँगा। अप्रमाद के प्रायश्चित्त के लिए साधु या साधक मिच्छामि दुक्कडं बोलता है। प्रायश्चित्त पाप की निवृत्ति के लिए किया जाता है।

टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख ने अपनी भावना रखी। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया ने पुलिस राष्ट्रीय गौरव रक्षक श्रीचरणों में अर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि गुरु से ज्ञान ग्रहण करना विशिष्ट बात होती है।

◆ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

— आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

हेल्थ चेकअप एंड एंटीबॉडी कैंप

पूर्वाचल।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, पूर्वाचल-कोलकाता द्वारा अस्तित्व कॉम्प्लेक्स में एक हेल्थ चेकअप एंड एंटीबॉडी कैंप का आयोजन आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा किया गया। इस कैंप में कुल 9३ लोगों ने फुल बॉडी हेल्थ चेकअप करवाया।

एटीडीसी के प्रभारी नरेंद्र छाजेड़, निवर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा, अध्यक्ष विकास सिंधी, मंत्री धीरज मालू, उपाध्यक्ष-प्रथम अमित बैद और एटीडीसी के संयोजक एवं कार्यसमिति सदस्य हेमंत बैद व अन्य सदस्यगण उपस्थित रहे।

फिट युवा-हित युवा लिलुआ।

बाली-बेलुर प्रेक्षावाहिनी तथा तेयुप, लिलुआ के संयुक्त तत्वावधान में फिट युवा-हित युवा के अंतर्गत प्रेक्षाध्यान का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में रखा गया। जिसकी शुरुआत नवकार मंत्र द्वारा हुई। प्रशिक्षक राकेश सिंधी एवं अरुण नाहटा द्वारा फिट युवा-हित युवा के अंतर्गत प्रेक्षाध्यान से कैसे बदले जीवन धारा प्रेक्षाध्यान साधना द्वारा हमें मूल्यवान जानकारी मिली।

संयोजक दीपक बागरेचा, राहुल चोपड़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया। आभार ज्ञापन तेयुप, लिलुआ के मंत्री गौरव घोड़ावत ने किया। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही।

रक्तदान शिविर

राजसमंद।

तेयुप कांकरोली के तत्वावधान में ५० फिट रोड स्थित प्रज्ञा विहार के प्रांगण में तेरापंथ धर्मसंघ के आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु की तेरस तिथि एवं नवरात्र अनुष्ठान स्थापना के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर तथा मधुकर रक्तपेढी राजसमंद के सहयोग से आयोजित किया गया। मुनि संजय कुमार जी स्वामी, मुनि प्रकाश जी एवं मुनि सिद्ध जी के मंगल आशीर्वाद से ये रक्तदान शिविर आयोजित हुआ।

संयोजक शैलेश चोरड़िया ने बताया कि डॉ० मीना के नेतृत्व में आर०के० हॉस्पिटल की टीम ने काम किया। गणमान्य जनों की उपस्थिति रही।

कांकरोली महिला मंडल, कन्या मंडल एवं किशोर मंडल की उपस्थिति

रही। किशोर मंडल प्रभारी अर्पित बाफना और संयोजक अखिल बाफना भी अपनी टीम के साथ उपस्थित रहे। रक्तदान कार्यक्रम के संयोजक शैलेश चोरड़िया एवं नितिन सोनी ने शिविर की जानकारी दी। इसमें लगभग ५० यूनिट रक्त का लक्ष्य प्राप्त किया गया।

सेवा कार्य

सूरत।

अभातेयुप के त्रिआयामी सेवा-संस्कार-संगठन कार्यों के अंतर्गत तेयुप द्वारा सेवा के क्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा किए गए पथ संचालन में नींबू पानी और पानी की सेवा का लाभ लिया गया। इस अवसर पर तेयुप सूरत के अध्यक्ष गौतम बाफना, उपाध्यक्ष महेश संकलेचा के साथ पदाधिकारी और कार्यकारिणी सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। सभी ने इस सेवा कार्य का लाभ लिया और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा तेयुप को साधुवाद प्रेषित किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेयुप के मानव सेवा को समर्पित 'मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव' आयाम के अंतर्गत तेयुप द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन एम०बी०आर० शांतीला अपार्टमेंट, मैसूर रोड में जीवरक्षा वालंटरी ब्लड बैंक के सहयोग से किया गया। सामुहिक नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेयुप उपाध्यक्ष अमित नौलखा ने पधारे हुए सभी का स्वागत किया।

तेरापंथ सभा राजराजेश्वरी नगर अध्यक्ष मनोज डागा ने कहा कि इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि रक्त देने वाला और रक्त पाने वाला कौन है—लक्ष्य है सफलतापूर्वक जरूरतमंद रोगियों की तत्काल जरूरत को पूरा करने का। शिविर में ३४ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। उपाध्यक्ष-द्वितीय धर्मे श नाहर, सहमंत्री-प्रथम वरुण पटावरी एवं एमबीडीडी के स्थानीय संयोजक विकास छाजेड़ एवं कार्यसमिति सदस्यों की उपस्थिति रही। शिविर में कार्यकारिणी सदस्य मनीष पगारिया का योगदान रहा। तेयुप द्वारा रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया तथा जीवरक्षा वालंटरी ब्लड बैंक ने तेयुप द्वारा इस कैंप के आयोजन के लिए सम्मानित किया। संयोजक विकास छाजेड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

दीपावली पूजन कार्यशाला

वापी।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित दीपावली पूजन कार्यशाला का आयोजन तेयुप द्वारा अभातेयुप सदस्य एवं मुख्य संस्कारक डी श्रेणी संस्कारक संजय भंडारी, अणुव्रत समिति के मंत्री एवं संस्कारक विवेक बोथरा, तेयुप अध्यक्ष एवं संस्कारक कुलदीप कोठारी की उपस्थिति में साध्वी चरितार्थप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया।

नवकार मंत्र के उच्चारण के साथ इस कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। अभातेयुप सदस्य संजय भंडारी ने सभी महानुभावों का स्वागत-अभिनंदन किया। दीपावली पूजन कार्यशाला करवाने हेतु संस्कारक कुलदीप कोठारी ने अर्थ सहित दीपावली पूजन विधि के बारे में जानकारी दी। मुख्य संस्कारक संजय भंडारी ने मंगलभावना यंत्र की स्थापना करते हुए मंगल यंत्र के महत्त्व को समझाया। संस्कारक विवेक बोथरा ने संस्कार विधि में लगने वाली उचित सामग्री के बारे में विशेष जानकारी दी।

साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने जैन संस्कार विधि के महत्त्व से सभी को अवगत कराया एवं दीपावली जैन संस्कार विधि से मनाने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री जी के मंगलपाठ से कार्यक्रम समापन हुआ।

जैन विद्या कार्यशाला प्रमाण पत्र वितरण

पेटलावद।

अभातेयुप व समण संस्कृति संकाय के संयुक्त तत्वावधान में जैन विद्या कार्यशाला परीक्षा (तीन बातें ज्ञान की पुस्तक पर आधारित) आयोजित हुई थी। उक्त परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले संभागियों को प्रमाण पत्र केंद्र से तेयुप पेटलावद को प्रेषित किए गए। मुनि वर्धमान कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा उक्त परीक्षा में सफलता प्राप्त संभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। जिसमें रत्नप्रभा कोटड़िया, सीमा पटवा, प्रीति पटवा, रेखा पालरेचा, पुष्पा पालरेचा, मोनिका गादिया, ममता बम्बोरी, मनीषा पटवा व मुदित पटवा ने सफलता अर्जित की।

प्रमाण पत्र का वितरण समण संस्कृति संकाय के सुनील भांगू द्वारा किया गया। तेरापंथ युवक परिषद, पेटलावद की ओर से अध्यक्ष रूपम पटवा उपस्थित थे। संचालन फूलचंद कांसवा द्वारा किया गया।

मंगलभावना समारोह

दिल्ली।

शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में मुमुक्षु प्रेक्षा का मंगलभावना कार्यक्रम गोयल श्रद्धा निवास, ग्रीन पार्क में आयोजित हुआ। साध्वी शशिरेखा जी ने अपने उद्बोधन में मुमुक्षु प्रेक्षा को प्रेरणा देते हुए कहा कि विनय और विवेक सफलता की कुंजी है। आचार्य तुलसी के अवदान ज्ञानशाला, साध्वी शिक्षा, स्त्री शिक्षा आदि का उल्लेख करते हुए कहा कि संयम साधना के कठोर मार्ग पर चलने के लिए समर्पण और अनुशासन का सदैव ध्यान रखना।

साध्वी शीतलयशा जी ने वैराग्य काल के संस्मरण को याद किया। साध्वी रोहितप्रभा जी व साध्वी मंदारयशा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी कांतप्रभा जी द्वारा रचित गीतिका का साध्वीवृंद ने संगान किया।

दिल्ली सभा के महामंत्री डालमचंद बैद, पूर्वाध्यक्ष गोविंद बाफना, संस्कारक सुशील डागा, तेयुप दिल्ली के पूर्वाध्यक्ष राजेश भंसाली, महिला मंडल पूर्वाध्यक्ष निर्मला कोठारी ने भावाभिव्यक्ति दी। अमिता बैद ने मंगलाचरण व दिल्ली सभा के मंत्री हीरालाल गेलड़ा ने गीत का सामुहिक संगान करवाया। वरिष्ठ श्राविका समाज ने मुमुक्षु का माल्यार्पण से अभिनंदन किया।

माता-पिता अरुण-ममता संचेती ने अपने भाग्य को सराहते हुए प्रेक्षा के वैराग्य भाव का बीजारोपण में ज्ञानशाला से मिले संस्कार व परिवार का धर्मसंघ के प्रति अनन्य आस्था व श्रद्धा को माना। मुमुक्षु प्रेक्षा ने आचार्यश्री के प्रवचनों को अपने संकल्प शक्ति के विकास का माध्यम माना, ज्ञानशाला के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की व संस्था में प्रवेश को अपना भाग्योदय माना। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष प्रदीप खटेड़ व विचारार्थिव्यक्ति के साथ आभार मंत्री माया दुगड़ ने किया।

मन को निर्मल बनाए रखने का...

(पृष्ठ १२ का शेष)

मन एक ऐसा तत्त्व है, जो हमारे उत्थान और पतन का एक कारण बनता है। हम अपने मन को उत्थान का कारण बनाए रखें न कि पतन का। जब-जब हमारे मन में शुभ परिणाम रहते हैं, तो ये परिणाम उत्थान की ओर ले जाने वाले बन जाते हैं। जब-जब हमारे मन में अशुभ परिणाम रहते हैं, ये परिणाम हमें पतन की ओर ले जाने वाले बन सकते हैं।

चार गतियों के आयुष्य बंध के जो कारण हैं, हम उनमें देख लें। नरक और तिर्यन्च आयुष्य के जो चार-चार कारण हैं, वे अशुभ परिणाम वाले कारण हैं। मनुष्य और देवगति आयुष्य बंध के जो चार-चार कारण हैं, वे शुभ परिणामों वाले कारण हैं। हिंसा और परिग्रह की तीव्रता है, वो नरक गति में ले जाने वाले हैं। छल-कपट के परिणाम तिर्यन्च गति के कारण हैं। जहाँ विनम्रता, अनिर्घ्या है, वे मनुष्य गति के आयुष्य के कारण हैं। जहाँ त्याग-तपस्या के कारण हैं, वे देवगति के कारण बन जाते हैं। हमारे में शुभ परिणाम रहे, ऐसा हमारा प्रयास रहे। कर्मों के उदय से मन में खराब परिणाम आ सकते हैं, हम उनसे मुकाबला करें। अच्छे मंत्र का पाठ करें तथा मन ही मन ये घोषणा कर दें कि ये विचार मेरे नहीं हैं। मैं खराब विचारों की निंदा करता हूँ। तो दुर्मन को परास्त करने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। साधना करते-करते आदमी मन से पार होने का भी अभ्यास कर ले।

अपने मन में राग-द्वेष युक्त दूषित विचार न आए। अध्यवसाय, लेश्या, ध्यान, परिणाम ये गहरे विचार मन का परिवार है। सारे शुभ विचार कल्याणकारी हैं। मन हमारा निर्मल-शुभ रहे। शुभ है, तो शांति का अनुभव हो सकेगा।

अब चातुर्मास का अंतिम महीना है। श्रावक-श्राविकाएँ इसका अधिक से अधिक लाभ उठा सके, ऐसा प्रयास करें। हम सभी मन को निर्मल बनाए रखने का प्रयास करें। मन निर्मल हो तो कल्याण हो सकता है, मन और भावों को शुद्ध बनाने से ही पाप दूर हो सकते हैं। आत्मा की नदी में नहाने से हमारी चेतना शुद्ध हो सकेगी।

मन रूपी जल में मोहनीय कर्म रूपी कीचड़ पड़ जाता है, तो मन गंदा बन जाता है। हम मन की निर्मलता को साधने का, प्राप्त करने का प्रयास करते रहें, भाव शुद्ध रहें तो हम उत्थान की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

पूज्यप्रवर ने आज प्रातः भीलवाड़ा शहर भ्रमण हेतु चतुर्मास स्थान से विहार किया। मार्ग में स्थानकवासी वर्धमान संघ की साध्वियों ने दर्शन किए। पूज्यप्रवर नागौरी गार्डन तेरापंथ भवन पधारे। थाना कोतवाली में पूज्यप्रवर का पदार्पण हुआ। अणुव्रत साधना स्कूल पधारे। वहाँ पर अमृत प्रेरणा प्रदान करवाई।

मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हम मूल को छोड़कर नश्वर हैं, उसके लिए समय लगता है, तो व्यक्ति अपने साथ में न्याय नहीं करता। हमें आत्मा के लिए समय निकालना चाहिए।



स्वस्थ समाज की रचना के लिए अहिंसक विचारधारा बहुत जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, 9 अक्टूबर, 2021

सुखों के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन शास्त्रों की प्राकृत अर्द्धमागधी और श्लोकों के माध्यम से, कहीं पद्य के माध्यम से, विभिन्न निर्देश, विभिन्न जानकारियाँ आगम वाङ्मय में प्राप्त होती हैं। यहाँ सूयगड़ों के प्रथम अध्ययन में बंधन को जानने और उसको तोड़ने का मुख्य निर्देश दिया गया है कि जानो बंधन क्यों है? फिर बंधन को तोड़ने का प्रयास करो।

बाहर का बंधन भी होता है। किसी आदमी को बाँध दिया है, वह भी छोटा बंधन है। बड़ा बंधन है, जिसकी चर्चा यहाँ शास्त्र में की गई है, वह परिग्रह का बंधन है। परिग्रह, मूर्च्छा, आसक्ति से आदमी बंध जाता है। वह बड़ा बंधन होता है। परिग्रह से जुड़ा हुआ एक दूसरा बंधन और है, वह है—हिंसा।

परिग्रह और हिंसा इन दोनों का आपस में संबंध है। हिंसा कार्य के रूप में सामने आती है, परिग्रह उसका कारण बनता है। परिग्रह है, तो हिंसा को छोड़ना मुश्किल प्रतीत हो रहा है। हिंसा और परिग्रह एक वस्त्र के दो सिरे के समान हैं। परिग्रह को पकड़कर रखेंगे तो हिंसा भी



साथ में रहेगी।

अहिंसा परमो धर्म: कहा जाता है, तो अपरिग्रह भी बड़ा धर्म है। लोभ है, वो हिंसा को जन्म देने वाला बन जाता है। तभी कहा गया है कि पाप का बाप लोभ होता है। शास्त्रकार ने बताया है कि परिग्रह

ही मनुष्य प्राणियों का स्वयं हनन करता है दूसरों से हनन भी करा देता है और हनन करने वाले का अनुमोदन कर देता है। इस प्रकार हिंसा में प्रवृत्त आदमी अपने बैर को बढ़ाता है। वह दुःख से मुक्त नहीं हो सकता।

बंधन को तोड़ना है, तो परिग्रह को भी तोड़ना होगा, हिंसा के बंधन को भी तोड़ना होगा। परिग्रह का बंधन टूट गया तो हिंसा का बंधन अपने आप ही लगभग संपूर्णतया खत्म हो जाएगा।

राग और द्वेष हिंसा के बीज हैं। परिग्रह इसको उत्तेजित करने वाला है। आदमी ध्यान दे कि मैं परिग्रह से कितना विरक्त हो सकता हूँ, हिंसा को कितना छोड़ सकता है। संपूर्णतया हिंसा और परिग्रह को छोड़ना देहधारी के लिए मुश्किल है, परंतु अल्पीकरण किया जा सकता है।

बारह व्रतों में स्थूल प्राणातिपात और इच्छा-परिमाण की बात आती है और

भोगोपभोग परिमाण के सीमा करने की बात आती है। यह एक प्रसंग से समझाया कि परिग्रह की चेतना जागने से किस तरह हिंसा हो जाती है। अर्थ-अनर्थ का कारण बन सकता है। ऐसे धन को तो मानो धिक्कार है।

अणुव्रत आंदोलन में भी अहिंसा की बात है। हर आदमी गार्हस्थ्य में भी अहिंसा का अनुसरण करें। अहिंसा से समाज भी सुरक्षित रह सकता है। कभी आदमी प्रेम-सौहार्द कर लेता है, तो कभी आदमी की आकृति में राक्षस भी दिखाई देता है। स्वस्थ समाज की रचना के लिए अहिंसा की विचारधारा, अहिंसा का दर्शन, अहिंसा का तत्त्व बहुत जरूरी होता है।

अहिंसा को राष्ट्र के संदर्भ में देखें। पड़ोसी राष्ट्र मैत्री से रहें तो कितना अच्छा लगता है। पड़ोसी-पड़ोसी शांति से रहे। हिंसा दुःख को, अशांति को पैदा करने वाली होती है। आचार्य महाश्रमण जी ने अहमदाबाद में

2002 की हिंसा में कहा था कि हिंसा में रहोगे तो पिछड़ जाओगे, अहिंसा में रहोगे तो विकास हो सकेगा। शास्त्रकार ने बताया है कि हिंसा से बैर बढ़ता है। बैर से बैर शांत नहीं होता। अबैर से बैर शांत हो सकता है। हम मैत्री-अहिंसा के द्वारा हिंसा को बंध करने का प्रयास करें। अहिंसा के पथ पर चलें, यह दुःख मुक्ति का मार्ग है। मोक्ष का मार्ग है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि जो व्यक्ति पराधीन होता है, उसे कभी भी किसी प्रकार का कोई सुख नहीं होता है। साधना का संबंध किसी व्यक्ति के साथ नहीं होता है, उसका संबंध तो अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ में होता है।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि मुहूर्त भर ही जीयो, पर अंगारे की तरह प्रज्वलित बनकर जीयो। धूर्ण की तरह लंबा जीवन जीना श्रेयस्कर नहीं होता है। जलती हुई अग्नि पर कोई पैर नहीं रखता है, पर जब वह बुझ जाती है, तो पैरों से कुचली जाती है।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में अणुव्रत लेखक संगोष्ठी, अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में शुरू हुआ। अणुविभा ने उत्कृष्ट व नैतिक लेखन के लिए अणुव्रत लेख पुरस्कार-2021 डॉ० वेदप्रताप वैदिक को एवं 2020 का लेखक पुरस्कार राजस्थान के मुख्यमंत्री के विशेषाधिकारी डॉ० फारूख अफरीदी को दिया गया। अणुविभा के अध्यक्ष संचय जैन ने अपनी भावना रखी। उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने प्रशस्ति-पत्र का वाचन किया। पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति व स्थानीय अणुव्रत समिति द्वारा भी पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि व्यक्ति का साधना स्तर ऊँचा होता है, तब वह शक्ति से संयोजित होता है।



मन को निर्मल बनाए रखने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, 29 अक्टूबर, 2021

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हम मनुष्य हैं। मनुष्यों में भी हम संज्ञी मनुष्य हैं। सिद्धांत है कि मनुष्य दो प्रकार के होते हैं—असंज्ञी मनुष्य और संज्ञी मनुष्य। समुच्छिन्न मनुष्य या गर्भज मनुष्य। जिन मनुष्यों के मन नहीं होता वे असंज्ञी मनुष्य होते हैं। जिनके मन होता है, वे संज्ञी या गर्भज मनुष्य होते हैं।

मन एक ऐसा तत्त्व है, वो अपने आपमें एक लब्धि है, शक्ति है। मनन से ऐसा निष्कर्ष सामने आ रहा है कि बहुत बढ़िया काम मन वाला प्राणी ही कर सकता है। बहुत घटिया काम भी मन वाला प्राणी ही कर सकता है। जिन प्राणियों के मन नहीं होता वे बड़ा पाप भी नहीं कर सकते और बड़ा धर्म या पुण्य का बंध भी नहीं कर सकते। इसलिए मन एक बहुत महत्वपूर्ण शक्ति होती है।

विचारणीय बात है कि आदमी कैसे मन का बढ़िया उपयोग करे। मन ही मन चिंतन करके प्राणी सप्तम नरक योग्य आयुष्य का बंध कर लेता है। मन ही मन चिंतन करते-करते एक प्राणी देवगति में जाने योग्य आयुष्य का बंध कर लेता है। मन को सुमन या दुर्मन भी बनाया जा सकता है।

नारकीय जीवों में भी मन होता है। तिर्यन्व के भी दो प्रकार हैं—संज्ञी और असंज्ञी तिर्यन्व। मनुष्यों और तिर्यन्वों में ये दो प्रकार हैं, परंतु नारकीय जीव के दो भेद नहीं होते। देवगति में भी सिर्फ संज्ञी ही होते हैं। नारकीय और देव संज्ञी तो हैं, पर संज्ञी होने पर भी नारकीय जीव इतना पुण्य बंध नहीं कर सकते कि वे देवगति में चले जाएँ। देव इतना पाप नहीं कर सकते कि वे सीधे नरक में चले जाएँ। तिर्यन्व और मनुष्य ऐसे प्राणी हैं, जो अपने मन के द्वारा चारों गति में जा सकते हैं।

(शेष पृष्ठ 99 पर)

